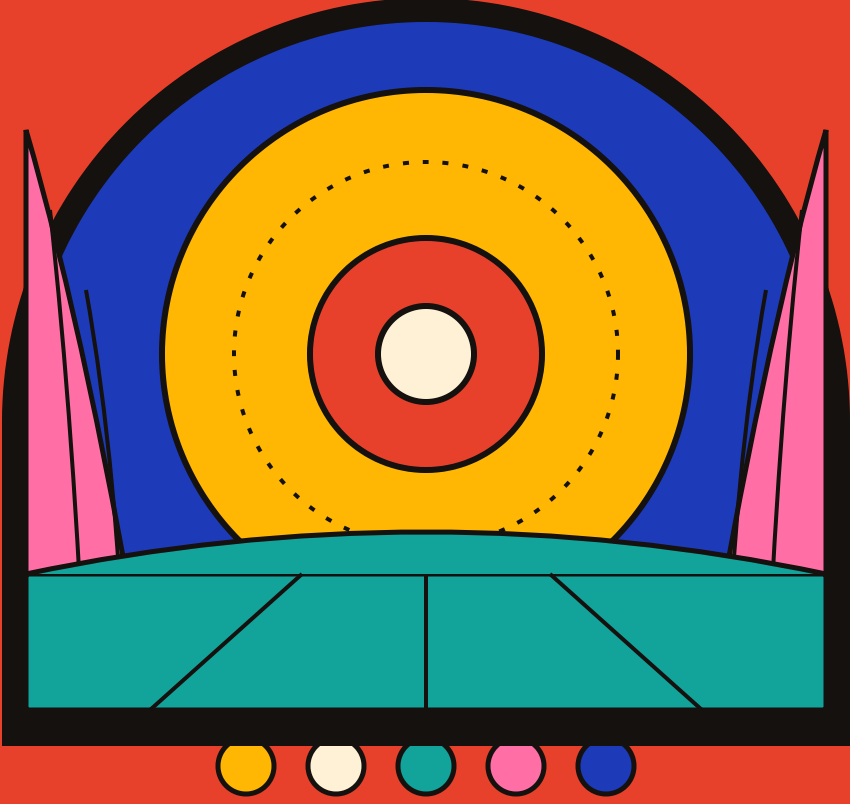


मैथिली साहित्यालोचना / साहित्यिक अध्ययन



# नित नवल

परमेश्वर कापड़ि

कथा • कविता • समालोचना • रंगमञ्च

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादन : विदेह • २०२६

मैथिली साहित्यालोचना / साहित्यिक अध्ययन

नित नवल

परमेश्वर कापड़ि

कथा • कविता • समालोचना • रंगमञ्च



गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादन : विदेह

२०२६

## प्रकाशन-विवरण

---

नित नवल परमेश्वर कापडि

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादन : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

मुद्रण-रूप : ६ × ९ इन्च | देवनागरी पाठ-संस्करण

## अनुक्रमणिका

---

|                                             |    |
|---------------------------------------------|----|
| ०१ कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा.....      | ४  |
| ०२ पद्य, अनुवाद आ काव्यालोचना.....          | १८ |
| ०३ रचना-संसारक विविध आयाम.....              | ३६ |
| ०४ रेड-रेड : नाट्यकृति आ रंग-विमर्श.....    | ४४ |
| ०५ गहन उग्रास : नाट्यशास्त्रीय मीमांसा..... | ५६ |
| ग्रन्थ-सूची.....                            | ७० |



## अध्याय ०१

### परमेश्वर कापडिक कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा

---

लोककथा, पौराणिक आख्यान आ भाषिक शिल्प

**भूमिका:** परमेश्वर कापडिक कथाकार-रूप

परमेश्वर कापडि- जनकपुरधाम निवासी, मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार- मुख्यतः नाटककारक रूपमे जानल जाइत छथि। मुदा हुनकर रचना-संसारमे कथा-खिस्साक एक समृद्ध संसार अछि जे आइधरि समुचित आलोचनात्मक ध्यान नहि पओलक अछि।

कापडिक कथा-संसार मुख्यतः पाँच धारामे विभक्त अछि:

(क) शुद्ध लोककथा- जाहिमे 'लछमिनिजा कनिजा' आ 'हनुमान नाम स्मरणके महिमा' उत्कृष्ट अछि।

(ख) पौराणिक कथाक नव-व्याख्या- 'यज्ञ-सीता', 'छौंड़ी-छौंड़ा सुद्युम्न', 'लक्ष्मी-बलि', 'तप आ सत्संग', 'हृदयबासी ईश्वर'।

(ग) बोधकथा (Didactic Tale)- 'शिक्षा आ दीक्षा', 'नम्बर'।

(घ) कथा-खिस्सा- 'कुत्ता-बिलाइ-मूस', 'गोनूबाबू घरेपर'।

(ङ) कथा-काव्य- 'दाम' (दीर्घ काव्यकथा, साक्षी)।

हुनकर सभ कथाक केन्द्रमे दूटा बात अछि- मैथिली लोकभाषाक जीवन्तता आ मैथिलीक सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ। अहि दुनूक मेल हुनकर कथाकें एक विशिष्ट भौगोलिक आ सांस्कृतिक पहचान दैछ।

## कथा-समीक्षा

### १. 'हनुमान नाम स्मरणके महिमा':

#### १.अ. कथावस्तु:

रावणक लंकामे नवग्रह देवता बन्दी अछि- शक्तिहीन, दीन-दुखी। हनुमानजी लंका-दहनक प्रसंगमे हुनका सभकेँ देखै छथि, पुछै छथि आ बन्धन तोड़ि मुक्त करै छथि। नवग्रह हनुमानसँ वर माँगैले कहै छथि, मुदा हनुमान कहै छथि- 'प्रभु राम छथिन्ह, कोनो वर माँगैके आवश्यकता नहि।' तैपर नवग्रह स्वयं वचन दै छथि: जे हनुमानक नाम जपत, तिनका नवग्रह कोनो दुख नहि देता।

#### १.आ. भाषा-विश्लेषण:

ई रचना मैथिलीक उत्कृष्ट नमूना थिक। 'रहए', 'हइ', 'अइ', 'अएला', 'हुनकासबके', 'ओकरासबके'- ई सभ मैथिलीक स्वाभाविक रूप थिक जे भारतक दरभंगा-मिथिला मैथिलीसँ किछु भिन्न नै अछि।

'लंकामे अगिलगगीक', अगराही-पसाही लगबैत जाइत जे रहए, त' ओत' हनुमानजीके शक्ति सामर्थहीन, मुइल-विलाइ भेल, नवग्रह सब देखाइ देलकनि।'

'अगिलगगी', 'अगराही-पसाही', 'मुइल-विलाइ'- ई शब्द-गुच्छ मैथिलीक जीवन्त प्रमाण थिक। 'मुइल-विलाइ' (मरल-विलाएल)- यएह द्विपदी समास मैथिलीक व्याकरण-सम्पदाक उदाहरण थिक।

#### १.इ. रस-विचार:

एहि कथामे भक्ति-रसक प्रधानता अछि। परन्तु मात्र भक्ति नहि- नवग्रहक दीनताक करुण रस आ हनुमानक वीरता (रावणक बन्धन तोड़ब)- एहि दुनूक मेलसँ एक सम्मिश्र रस-अनुभव होइछ। आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार, रचनाक मुख्य ध्वनि थिक- 'ईश्वर-कृपा माँगएसँ नहि, स्वयं-समर्पणसँ भेटैछ।' ई ध्वनि वाच्यार्थसँ परे व्यञ्जनास्तरपर स्थित अछि।

### १.ई. वक्रोक्ति:

कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टिसँ देखने, कथाक सर्वाधिक वक्र उक्ति थिक- 'हुनका अछैतमे अहाँसबस' हमरा कोनो वर मांगके आवश्यकता नहि।' भक्त जखन वर माँगे, प्रभु देथि- ई सामान्य भक्ति-तर्क थिक। परन्तु एत' हनुमान उनटे भक्तिकेँ परिभाषित करै छथि- 'वर माँगनाइ भक्तिक कमजोरी थिक।' ई वक्रता सामान्य कथाकेँ दार्शनिक ऊँचाइ दैछ।

### १.उ. नव्य-न्यायिक दृष्टि:

गंगेशक 'शब्द-प्रमाण' (आप्त-वाक्य) सिद्धान्तक अनुसार, नवग्रहक वचनवद्धता- 'जे हनुमानक नाम जपत तिनका दुख नहि'- एक आप्त-वाक्य थिक। नव्य-न्यायमे आप्त-वाक्यक प्रमाण-मूल्य अछि कारण वक्ता (नवग्रह) प्रामाणिक छथि। कापड़ि लोककथाक माध्यमसँ एहि शास्त्रीय तर्ककेँ सुलभ बनबै छथि।

### १.ऊ. विदेह दृष्टि:

मैथिली साहित्यमे हनुमान-कथाक परम्परा बहुत पुरान अछि। परन्तु कापड़ि एहि कथाकेँ एक नव भौगोलिक-सांस्कृतिक परिवेशमे प्रस्तुत करै छथि। नेपालक जनकपुरधामक मैथिली-कथाकार जखन राम-रावण-हनुमानक कथा कहै छथि, तखन ओकर लोकस्वर आ दृष्टि अपन होइत अछि।

## २. 'लछमिनिजा कनिजा': परमेश्वर कापड़िक सर्वश्रेष्ठ लोककथा

### २.अ. कथावस्तु:

एक गाममे बुढ़बा-बुढ़िया रहैछ। बुढ़ियाक पुतौह (बहू)- 'लबकनिजा', 'छोटखुटिया भुटिया'- परन्तु 'काज-धन्धा आ बुइध-गियानमे बड़ चौतरी।' एक रातिमे नदिया (गीदड़-सियार) बजैछ- बहू पशुभाषा जनैछ। नदिया बतबैछ जे नदीमे बहल लाशक जांघमे जोड़ा लाल (माणिक) अछि। बहू साहस कऽ नदीसँ लाल निकाललक, लाशकेँ नदियाके दैत घर घुरल। साउस नहि बुझलक- सोचलक बहू लाश खाइत अएल। उपद्रव भेल, बहूकेँ नैहर पठएल गेल। रास्तामे एक कौआ बाजल- कौआ-भाखाक ज्ञान बहूकेँ। कौआ बतेलक- आयके दिन साँप-दूध पियाओ त' साँप हीरा-मोती देखाओत। बहू ससुरकेँ बुझेलक।

ससुर मानि गेल। साँपकें दूध-लावा पियाओलक, हीरा-मोती पेलक। घर धन-धाम भरि गेल। साउस-पुतौह मिलि-व्यवहरि सुख-आनन्दसँ रहए लागल।

## २.आ. लोककथाक संरचना-विश्लेषण:

रूसी लोककथा-सिद्धान्तकार व्लादिमीर प्रोप (Vladimir Propp)क 'मोर्फोलॉजी ऑफ फोकटेल' (1928) क अनुसार, लोककथाक एक निश्चित संरचना होइछ। 'लछ्मिनिजा कनिजा' एहि संरचनाकें सटीक रूपसँ पालन करैछ:

(अ) प्रारम्भिक अभाव-स्थिति (Initial Lack): गरीबी, बहूक अपमान।

(आ) दानदाता (Donor): नद्विया आ कौआ-जे बहूकें विद्या दैछ।

(इ) सहायक तत्त्व (Helper Function): पशुभाषा-ज्ञान-बहूक विशेष शक्ति।

(ई) संकट-परीक्षण (Test/Challenge): रातिमे नदीमे जेबाक साहस।

(उ) अन्तिम विजय (Victory): हीरा-मोती, पारिवारिक मेल।

परन्तु मैथिली-मिथिला परम्पराक एक विशेषता अछि जे ई साँप-दूध प्रसंग अन्तमे जोड़ैछ- यएह मैथिली लोककथाक अपन रचनात्मक अतिरिक्त विशेषता थिक।

## २.इ. भाषाक असाधारण सम्पदा:

'लछ्मिनिजा कनिजा' रचनाक सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष थिक हुनकर लोकभाषाक शब्द-सम्पदा। निम्नलिखित शब्द-गुच्छ मैथिलीक अनमोल निधि थिक जे मैथिलीमे जीवन्त अछि:

'लबकनिजा', 'हडहडही खटबनरी', 'छोटखुटिया भुटिया', 'छगुनाए', 'धतपताए', 'गुनधुनाए', 'पनिआए', 'लोभाए', 'झिसि-बुन्नीबला', 'बिकराल राइत', 'हुआं-हुआं', 'जुमुस बान्हक', 'हबक्का मारि', 'लत्तोपतो', 'हठि-बरदम', 'ढुक्का-फडकी', 'धीपल आइग-बाउल', 'छबकल दबकल', 'पिठिया-टोक धमक्का', 'नडटिनिजा रकमसनी', 'ओधबाधक', 'लोहछि झंटियाक', 'पछमुडिया कनडेरिया', 'हपैस-लपैकक'।

ई शब्दसभ मैथिली लोकभाषामे जीवन्त अछि। कापड़ि ई सहेज-समेटि एकरा साहित्यिक प्रतिष्ठा दै छथि-इएह हुनकर सभसँ पैघ योगदान अछि।

### २.ई. स्त्री-चरित्रक विशेषता:

बहू 'लबकनिजा, छोटखुटिया भुटिया' थिक- देखएमे साधारण। परन्तु पशुभाषाक दुर्लभ ज्ञान हुनका लग अछि। ई ज्ञान-लोक-परम्परामे 'पशु-सिद्ध' कहल जाइछ- बहूकें असाधारण बनाबैछ। ओ एकाएकी रातिमे नदी जाइछ- साहस। लाशसँ लाल निकाललक- कर्मठता। साउसक क्रोधमे नहि टूटल- धैर्य। कौआक भाखा बुझिकऽ ससुरकें बुझेलक- बुद्धि। ई चरित्र मिथिलाक 'लछमिनिजा'-साहसी, बुद्धिमान, धनलक्ष्मी-स्त्री-आदर्शक प्रतीक थिक।

### २.उ. भक्ति-रस आ करुण-रसक समन्वय:

कथाक मध्यमे बुद्धियाक क्रोध (रौद्र रस) आ बहूक असहायता (करुण रस)-दुनूक सम्मिश्रण। परन्तु अन्तमे शान्त-रसमे परिणति- 'तेकर बाद त' साउस-पुतौह सबगोटे मिलि-व्यवहारिक' सुख आनन्दस' रह' लागल।' ई मैथिली लोककथाक परम्परागत 'सुखद अन्त' थिक जे गृहस्थ-जीवनक आदर्शकें प्रतिष्ठित करैछ।

### २.ऊ. तुलनात्मक दृष्टि:

'लछमिनिजा कनिजा' मैथिलीक 'सुनरी-बहुरिया' कथाक परम्परासँ जुडल थिक। परन्तु ओहि परम्पराक बहुसंख्य कथामे बहू केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होइछ- जादू अपने होइछ। एत' बहू स्वयं साहस करैछ, स्वयं बुद्धि लगाबैछ। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण थिक- कापड़ि बहूकें 'एजेन्ट' (कर्ता) बनाबै छथि, केवल 'पेशेन्ट' (भोक्ता) नहि।

### ३. 'यज्ञ-सीता': पुराण-कथाक साहसी पुनर्पाठ:

#### ३.अ. कथावस्तु:

जहियासँ राजा राम यज्ञ करै छथि, स्वर्णमयी सीता-प्रतिमा निर्माण होइछ। एहि यज्ञ-सीताक एक समूह राम-निवासमे जमा भऽ जाइछ। ओसभ दुखित, उपेक्षित। एकदिन सभ मिलि रामलग जाइछ- स्वीकार माँगैछ। राम एकपत्नी-

व्रताक तर्क दै छथि- 'हम मिथिलाधिपति जनकक पुत्री सीताक पाणि-ग्रहण कएने छी।' यज्ञ-सीता प्रश्न करै छथि- 'यज्ञमे सहयोग देलहुँ, जीवनमे किएक नहि?' अन्ततः राम समाधान दै छथि- द्वापरमे कृष्णावतारमे ई सभ गोपी बनि ..। 'ओ सबहेटा यज्ञ-सीता ब्रजमे गोपीसब बनलथि।'

### ३.आ. साहित्यिक साहसः

ई कापडिक सर्वाधिक साहसी रचना थिक। मैथिली लोक-परम्परामे राम-सीता पवित्र-ओहिमे प्रश्न करब असामान्य थिक। परन्तु कापडि मिथिलाक सीता-केन्द्रित दृष्टिकोणसँ (जनक-पुत्री, मिथिलाक बेटी) राम-सीता-सम्बन्धक पुनर्विचार करै छथि।

'यज्ञ करैत काल हम परमावश्यक रहलेटा छी ! / हमरा बिनु अपूर्ण छी ! / यज्ञाधिकारी यज्ञकर्ता हमरे सबके संगस' ने?'

ई तर्क शास्त्रीय दृष्टिसँ अटूट अछि। यज्ञमे अधाङ्गिनी अपरिहार्य- ई वैदिक विधान थिक। कापडि यज्ञ-सीताक मुखसँ ई शास्त्रीय तर्क राखि रामकें उत्तर देबएले बाध्य करै छथि।

### ३.इ. लोक-स्त्रीवादः

ई रचना मैथिली लोक-साहित्यमे स्त्री-अधिकारक विमर्शक श्रेष्ठ उदाहरण थिक। यज्ञ-सीता केवल 'अबला' नहि- ओ तर्क करैछ, माँग राखैछ, अपन अधिकार बुझैछ। 'एहनमे अपनाके आदर्श मर्यादापुरुषोत्तम कहबैत छी?'- ई प्रश्न नेपालक मैथिली साहित्यमे एकटा नव अध्याय खोलैछ।

### ३.ई. ध्वनि-विश्लेषणः

रचनाक वाच्यार्थ-स्तर थिक- यज्ञ-सीताक कथा। परन्तु व्यञ्जनास्तरपर कापडि एक गहन सन्देश दै छथि: 'जे समाज अपन स्त्रीकें काजमे उपयोग करैछ, परन्तु अधिकार नहि दैछ- ओ असन्तुलित थिक।' आनन्दवर्धनक दृष्टिसँ, ई ध्वनि रचनाक 'आत्मा' थिक।

### ३.उ. पुराण-पुनर्व्याख्याक परम्पराक सन्दर्भमे:

मैथिली कवि विद्यापति (ज्योतेरीश्वर पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न) 'भूपरिक्रमा' आ 'पुरुषपरीक्षा'मे पौराणिक कथाकें नव दृष्टिसँ देखने छलथि। कापडि ओहि परम्पराकें आगू बढ़वै छथि- परन्तु नव सामाजिक चेतनाक संग। ई विदेह समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक।

### ४. 'छौंड़ी-छौंड़ा सुद्युम्न'- लिङ्ग-परिवर्तनक पौराणिक कथा

#### ४.अ. कथावस्तु:

राजा विवस्वान् मनु आ रानी श्रद्धाक पुत-कामना। रानी पुतकरन यज्ञ करबैछ- परन्तु कहैछ 'जब होए तब बेटिए।' ऐ कामनाक प्रतापसँ बेटी जन्मैछ- इला। बेटी पाँच-सात वर्षमे मरदनमी व्यवहार। जाँच कएलापर पता लगैछ जे यज्ञमे पुरहितक जपसँ बेटा होएबाक छल- रानीक कामनाक कारण बेटी भेल, मुदा मरदनमी रहि गेल। वशिष्ठ तप-बलसँ बेटीकें लइका (सुद्युम्न) बनेलक। सुद्युम्न जंगलमे जाइछ- शिव-पार्वतीक केलि-विहारसँ ओ वनमे स्त्री बनि जाइछ। बुध ऋषि प्रेम कएलक- पुरुरवा पुत्र भेल। वशिष्ठ देवीभागवत सुनाकऽ स्थायी पुरुष बनेलक। राज्याभिषेक भेल।

#### ४.आ. लिंगभेद-विमर्श:

ई कथा श्रीमद्देवी भागवत महापुराण (अध्याय ३)क आधारपर अछि। परन्तु कापडि एहि पौराणिक कथाकें मैथिलीक अपन लोकभाषामे पुनर्प्रस्तुत करै छथि। कथामे लिंग-परिवर्तन (Gender fluidity) क प्रश्न अछि- जे आधुनिक लिंगभेद-विमर्शसँ जुड़ल अछि। रानीक 'जब होए तब बेटिए'- ई कामना समाजक पुत्र-पक्षपातकें उलटाबैछ।

#### ४.इ. भाषाक सजीवता

'ओकरा इला बेटी चारि-पाँच बरखके भ' गेलै त' ओकर सबटा चालि-ढालि, बगय-बानि मरदनमी लगै! रहै छौंड़ी आ उ बेसी काज बात करै छड़ा जिका।'

'बगय-बानि', 'छड़ा जिका'- ई मैथिलीक अपन शब्द थिक। 'बगय-बानि' माने चाल-ढाल आ 'छड़ा जिका' माने लड़कापन जकाँ- ई शब्द मानक मैथिलीक शब्दकोशमे नहि भेटत।

#### ४.ई. नव्य-न्यायिक दृष्टि:

गंगेशक 'व्याप्ति' सिद्धान्तक अनुसार, कथामे एक तर्कशृंखला अछि: (अ) देवी भागवत सुनबासँ (हेतु) → (आ) सुद्युम्नक स्थायी पुरुष-रूप (साध्य)। परन्तु कापड़ि ऐ व्याप्तिकेँ अन्तिम सत्य नहि मानै छथि- कारण पुरुरवाजी (सुद्युम्नक पुत्र) माता-मातृत्वक प्रमाण थिक। ई नव्य-न्यायक 'व्याप्ति-खण्डन' तकनीकक नाटकीय उपयोग थिक।

#### ५. 'हृदयबासी ईश्वर'

##### ५.अ. कथावस्तु:

सृष्टिक आरम्भमे ईश्वर मनुष्यकेँ विशेष बुद्धि-ज्ञान देलखिन। मुदा मनुआ प्रत्येक छोट-बड़ समस्यामे ईश्वरकेँ खोजऽ लागल। ईश्वर परेशान- जंगल-पहाड़, खोला-कन्दरामे नुकाइथ, तैयो मनुआ खोजिए लैथ। अन्ततः ईश्वर एहन ठाम नुकाएलथि जतय मनुआ खोजऽ नहि जाओत- हुनकर अपन हृदयमे।

##### ५.आ. वेदान्त-लोक:

तीनू परम्पराक मेल: ई कथाक बीजविचार तीन परम्परामे अछि: (अ) वेदान्त- 'तत् त्वम् असि', ब्रह्म अपन भीतर। (आ) मैथिली लोककथा- ईश्वरकेँ खोजैत- खोजैत हृदयमे पाबब। परन्तु कापड़ि ऐ तत्त्वज्ञानकेँ शुष्क दर्शन नहि, हास्यात्मक कथाक रूपमे प्रस्तुत करै छथि। 'घैहर गरजु, हेहर-थेथर मतलबी लोक'- ई ईश्वरकेँ खोजैत परेशान मनुआक चित्र हास्यरसक सुन्दर उदाहरण थिक।

##### ५.इ. भाषाक खेल

'ईश कतबो चोरा-नुकाक' औढ़ कातमे चलि जाथि, घैहर गरजु, हेहर-थेथर मतलबी लोक हिनका ताकिए लनि।'

'औढ कात' (एकान्त कोना), 'घैहर गरजु' (अत्यन्त आग्रही), 'हेहर-थेथर' (हठी-जिद्दी)- ई शब्द-समूह मैथिलीक जीवन्तताक प्रमाण थिक। 'घैहर' आ 'हेहर'- दुनू ध्वन्यात्मक शब्द जे सुनितहि अर्थ स्पष्ट करैछ।

#### ५.ई. हास्य-दर्शन:

ईश्वर परेशान छथि- ई मानवीय छवि (Anthropomorphism) लोककथाक विशेषता थिक। परन्तु कापड़ि ऐ परेशानीकेँ दार्शनिक बनाबै छथि: ईश्वर जतए सहज उपलभ्य- हृदयमे- ओत' मनुआ कहियो नहि खोजैत। ई वक्रोक्ति (Irony)- लोककथाकेँ दर्शनक स्तरपर उठाबैछ।

#### ६. 'लक्ष्मी-बलि खिस्सा' (रक्षाबन्धन-प्रसंग)

##### ६.अ. कथावस्तु:

विष्णु राजा बलिक द्वारपर दरबान छथि- वचनबद्धता चलते। लक्ष्मी प्रतीक्षित, चिन्तित। नारद कारण बतबै छथि- वामन-बलि प्रसंग। लक्ष्मी भेख बदलि राजा बलि ओहिठाम जाइ छथि, राखी बान्है छथि। बली दान देबए चाहै छथि। लक्ष्मी माँगै छथि- 'उ दरबान हमरा द' दा'।' बली दैछ। तहिणसँ रक्षाबन्धन भाइ-बहिनक पावनि।

##### ६.आ. कथाक लोक-पौराणिक सम्मिश्रण:

ई कथा विष्णु-पुराण आ भागवत-परम्पराक आधारपर अछि। परन्तु कापड़ि एहिमे मैथिलीक लोकभाषाक जीवन्तता भरि दै छथि। 'अहर ताकय, पहर ताकय', 'बटजोहीमे आंइख खिया', 'तलबल-तलबल लाढ-दुलार', 'हलसल लहालोटे'- ई सभ मुहावरेदार प्रयोग कथाकेँ सजीव बनाबैछ।

'लक्ष्मीजीके चालि-ढालि, बगय-बानिसब बलीके बड नीक लगलनि। हुनको उत्सुकता बढ़लनि आ हपसि-लपकिक', दुलारस' हुनका कहलकनि- हे ऐ, बौआ! अहां के छी?'

'हपसि-लपकिक'- मैथिलीक ई मुहावरा (प्रेमभावसँ आगू झपटब) बहुत सटीक अछि। लक्ष्मीक बहिन-रूप- ई प्रेमक सहज अभिव्यक्ति थिक।

### ६.इ. स्त्री-शक्ति-विमर्श

ऐ कथामे लक्ष्मी निष्क्रिय नहि छथि- ओ स्वयं योजना बनबैछ, भेख बदलैछ, बलिकेँ जोड़तोड़ करैछ, विष्णुकेँ मुक्त करबैछ। धन-देवी स्वयं अपन पतिकेँ मुक्त करए मे सक्षम-ए एक सशक्त नारी-आख्यान थिक।

### ७. 'तप आ सत्संग'

#### ७.अ. कथावस्तु:

विश्वामित्र आ वशिष्ठक बीच विवाद- 'तप श्रेष्ठ या सत्संग?' ब्रह्मा आ विष्णु दुनू फेरी-फन्नामे नहि पड़ैछ। अन्ततः शेषनागक परीक्षा- पृथ्वीक भार उठायब। विश्वामित्र अपन समस्त तपसँ उठाबए गेल- नहि उठा सकल। वशिष्ठ 'एक दिनक सत्संगक पुण्य' दैत बजलाह- पृथ्वी अत्तमे लटकल गेल। तप हारल, सत्संग जीतल।

#### ७.आ. दार्शनिक कथाक रूप:

ई 'दार्शनिक-तर्क कथा' (Philosophical Fable) थिक- जाहिमे एक गूढ़ दार्शनिक प्रश्नकेँ कथाक रूपमे हल कएल जाइछ। 'तप' आ 'सत्संग'- ई व्यक्तिगत साधना आ सामाजिक-आध्यात्मिक सामुदायिकताक प्रश्न थिक।

कापड़िक हास्य-दृष्टि सेहो जागृत रहैछ- 'बड बढिजा, बड नीक बात। शेष भगवान हिनका दुनूके सोहरदे आडे कहलखिन'- ई 'सोहरदे आडे' (सामनेसँ)- हास्यात्मक ढंगसँ शेषकेँ न्यायाधीशक भूमिकामे राखैछ।

#### ७.इ. लोकभाषाक प्रयोग

'ई सुनि, ऋषि विश्वामित्रके ईख बिख लागि गेलैन आ पिनकले, फनकि बजलाह- एह, हमरा भुते ई एतनीटा भार केना नै उठत!'

'ईख-बिख लागब' (ईर्ष्यासँ जलब), 'पिनकले-फनकि' (क्रोधसँ गर्म होकऽ)- ई दुनू मुहावरा मैथिलीक अनमोल निधि थिक।

## ८. बोधकथा- 'शिक्षा आ दीक्षा' आ 'नम्बर'

### ८.अ. 'शिक्षा आ दीक्षा'

गुरुकुल-परम्परामे एक गुरु राजकुमारकें विदाइसँ पूर्व जनसमक्ष अकारण मारैछ। अगले दिन कारण बतबैछ- 'अन्यायक अनुभव कराबए ले। राजा बनबापर न्याय करबाक काल अन्यायपीडितक वेदनाक ज्ञान होएतह।'

ई बोधकथा भारतीय 'नैतिक-कथा' परम्पराक निकट थिक। परन्तु शिक्षाक ई 'experiential learning' (अनुभव-आधारित शिक्षा) पद्धति आधुनिक शिक्षाशास्त्रक सिद्धान्तसँ मेल खाइछ। 'ओहिस' सबके भितरका आइख खुइज गेलनि'-ई वाक्य कथाक दार्शनिक सार थिक।

### ८.आ. 'नम्बर'

रातिमे एक सेठ भटकि मन्दिरमे जाइछ। एक दुखित लोककें पैसा दैछ- अपन नम्बर-कार्ड सेहो दैछ। ओ लोक कहैछ- 'हमरा नम्बर बुझल छह।' सेठ अचम्भित-ओ कहैछ 'भगमानक नम्बर, जे अहाँकें हमरापास पढेलक।'

ई कथा एक उत्कृष्ट 'twist ending' (चमत्कारी अन्त) बला बोधकथा थिक। मात्र एक पन्नाक रचना- परन्तु गहन दार्शनिक सन्देश। ईश्वर-विश्वासक ई चित्रण मैथिली बोधकथाक श्रेष्ठ उदाहरण थिक।

## ९. 'कुत्ता-बिलाइ-मूस' खिस्सा

### ९.अ. कथावस्तु:

कुत्ता-बिलाइ-मूस- तीन मित्र। कुत्ता तीर्थयात्रापर जाइछ, सभ कागज-पत्र बिलाइकें देइछ। बिलाइ मूसकें राखएले देइछ। मूस खा-ओढ़ि नष्ट करि दैछ। कुत्ता फेरि आबएपर- कागज नष्ट। बिलाइ मूसकें मारए उद्यत होइछ। मूस भागैछ- बुझैछ नहि किएक सभ खेहारि रहल अछि। 'तहिएस' आइधरि कुत्ता बिलाइकें, बिलाइ मूसकें देखितें दौड़ैछ।

## १.आ. आद्य-कथाक चरित्र:

ई 'aetiological tale' (आद्य-कथा) थिक- जे कोनो सामान्य घटनाक मूल कारण बतबैछ। 'किएक कुत्ता बिलाइकेँ आ बिलाइ मूसकेँ खेहारैछ'- ऐ प्रश्नक मजेदार लोक-उत्तर। ई कथा-प्रकार विश्वक सभ लोककथाक परम्परामे थिक। 'जस्ट सो स्टोरीज' (Rudyard Kipling)- ई पाश्चात्य समकक्ष थिक।

## १.इ. न्याय-विमर्श:

मूस 'बुझबे नै करए जे सभ किएक खेहारि रहल अछि'- ई वाक्य गहन थिक। ओ कागज खाइत आ ओढैत छल- ओकरालेल ई जरूरत थिक। परन्तु एकर परिणाम- सभक हानि। ई 'अनजान-कुतृत्य'क परिणामक कथा थिक। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ, मूसक 'ज्ञान-अभाव' (absence of knowledge) हुनकर कर्मकेँ नैतिकत: अपराध नै बनाबैछ।

## १०. 'गोनूबाबू घरेपर' खिस्सा

### १०.अ. कथावस्तु:

गोनूझा- 'धूर्तोमे धूर्त, महा चुस्त-चलाक।' दीर्घकाल बाहर रहि गाम घुरलखिन। सभ पुछैछ- 'कत' गेल छलिऐ?' उत्तर- 'बुझू, गामेपर।' सभ अकचकाइत। असल कारण: आसिन-कातिक महिनामे लोक सभ 'माँग-खाँग'पर आबैछ। एहन महिनामे घर नहि रहि गामसँ निकडल गेल छल। घुरलापर सेहो— 'बुझू, गोनूबाबू घरेपर।'

### १०.आ. गोनूझा-परम्परामे स्थान:

मैथिलीक 'गोनूझा' एक विशिष्ट लोक-नायक थिक- चालाक, व्यंग्यकार, अपन लाभ बुझनिहार। आन भाषासभमे ई 'नसरुद्दीन होजा' (तुर्की), 'अकलतम' (हिब्रू), 'बीरबल' (हिन्दी)- जेहन चरित्र थिक। कापडि एहि परम्पराकेँ जीवन्त रखै छथि।

'बुझू, गोनूबाबू घरेपर'- ऐ वाक्यक बहुस्तरीय अर्थ अछि: (अ) शाब्दिक- 'हम गामेपर छी।' (आ) व्यंग्यार्थ- 'कत' गेल छलहुँ से नहि बतेबै।' (इ) निहित-

'मांग-खाँग-बला लोकसभसँ बचए गामसँ भागल छलहुँ।' ई तीन स्तर कुन्तकक 'वक्रोक्ति' थिक।

### १०.इ. सामाजिक व्यंग्यः

'ऐ महिनामे आबि, केहनो घरेके कोठी, भम्ह भइए जाइछ'- ई आसिन-कातिकक आर्थिक तंगीक सटीक चित्रण थिक। गोनूझाक चालाकी एक जीवन-रणनीति थिक- हँसीमे थिक, तथापि यथार्थ थिक। मैथिल समाजक ग्रामीण आर्थिक चक्रक ई दर्पण थिक।

समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

### ११.अ. कापड़िक कथाकार-रूपक विशेषता

मैथिलीक खाँटी स्वरूपक संरक्षण

कापड़िक सभसँ विशिष्ट योगदान थिक- समानान्तर धाराक खाँटी मैथिली कें साहित्यिक प्रतिष्ठा देनाइ। 'लबकनिजा', 'हडहडही', 'छगुनाए', 'धतपताए', 'हपसि-लपकिक', 'पछमुडिया', 'हठि-बरदम', 'वैहर गरजु', 'हेहर-थेथर'- ई सभ शब्द यदि कापड़ि नहि लिखितथि तऽ साहित्यमे नहि अबितए।

पशु-भाषा परम्पराक पुनरुद्धार

'लछमिनिजा कनिजा'मे पशुभाषा-ज्ञान, हनुमान नाम स्मरणके महिमा'मे दिव्य-बुद्धि- ई दुनूमे कापड़ि मैथिली लोककथाक प्राचीन 'पञ्चतन्त्र-जातक' परम्पराकें जीवन्त रखै छथि। आधुनिक मैथिली कथामे ई परम्परा लगभग लुप्त भऽ गेल छल।

पौराणिक कथाक नव-पाठ (Counter-reading)

'यज्ञ-सीता'मे राम-सीता-सम्बन्धक प्रश्न, 'छाँडी-सुदुम्न'मे लिंग-परिवर्तनक कथा, 'हाय राम!'मे रामक 'मर्यादा'पर प्रश्न- ऐ सभमे कापड़ि पौराणिक कथाकें आँखि बन्द कऽ स्वीकार नहि करै छथि। ओ 'critical engagement' (आलोचनात्मक संवाद) करै छथि- इएह हुनकर आधुनिकता थिक।

हास्य-व्यंग्यक कुशल प्रयोग

'गोनूबाबू घरेपर', 'नम्बर', 'तप आ सत्संग', 'हृदयबासी ईश्वर'- सभमे हास्य-व्यंग्य अछि। परन्तु ई हास्य सरल मनोरंजनसँ आगू अछि- दर्शन आ सामाजिक टिप्पणी।

### ११.आ. सीमा

(क) कथाक लम्बाइ: अधिकांश कथा अत्यन्त संक्षिप्त (लघु-आकारक)- गहन चरित्र-विकास सम्भव नहि होइछ।

(ख) पुनरावृत्ति: दोहराओल विषय बहुत अछि- सम्पादन-अभावक परिणाम।

(ग) कथाक व्यापकता: सभ कथा धार्मिक-पौराणिक वा लोकनीतिक अछि। समकालीन सामाजिक यथार्थपर आधारित कथा (जेना 'लछमिनिजा' जेहन) बहुत कम अछि।

### ११.इ. मैथिली लोककथाक इतिहासमे स्थान

मैथिली लोककथाक इतिहासमे- मैथिली परम्परामे कापडि विरल छथि जे ग्रामीण मैथिलीकें साहित्यिक कथाक माध्यम बनाबै छथि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ- 'मुख्यधारा इतिहाससँ वञ्चित रचना'- कापडिक कथा मुख्यधारा मैथिली साहित्य-इतिहाससँ 'छोडल गेल' अछि। नेपालक मैथिली कथाकारकें साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित इतिहासमे ठाम नहि भेटैत छल। एहि समीक्षाक माध्यमसँ विदेह ओहि अन्यायकें सुधारए चाहैए।

## अध्याय ०२

### परमेश्वर कापडिक पद्य-रचनाक आलोचनात्मक समीक्षा

---

मौलिक पद्य, अनुवाद, बालगीत आ गजल-विवेचन

**भूमिका:** परमेश्वर कापडिक कविता-संसार

परमेश्वर कापडिक रचनासंसारमे पद्य-रचनाक विविध स्तर अछि- हुनकर मौलिक पद्य, हुनकर आलोचनामे उद्धृत अन्य कविक गजल, बालगीत, ऋग्वेदक अनुवाद, संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवाद, आ विभिन्न लोकगीत-फकडा। पद्य-रचनाक श्रेणी निम्न प्रकारसँ अछि:

(क) मौलिक मैथिली दोहा/मुक्तक

(ख) ऋग्वेद नासदीय सूक्तक मैथिली अनुवाद -'तत्त्वबोध'

(ग) संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवाद -गीता, नासदीय, सीता-स्तोत्र

(घ) बालगीत -'हमर जनकपुरधाम', 'सीता अवतार'

(ङ) 'रेड-रेड'क गीत-फकडा

(च) हिन्दी गजल (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) -कापडिक समीक्षा-सहित

(छ) डा राजेन्द्र विमलक मैथिली गजल -कापडिक विस्तृत समीक्षा

(ज) कथा-काव्य 'दाम'

१. 'तत्त्वबोध'- ऋग्वेदक नासदीय सूक्तक मैथिली अनुवाद

ई एहि कृतिमे चर्चित सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी पद्य-रचना थिक। ऋग्वेदक दशम मण्डलक १२९ म सूक्त -'नासदीय सूक्त'- जे सृष्टिक रहस्यपर विश्वसाहित्यक

प्राचीनतम दार्शनिक प्रश्न उठाबैछ- तकर कापड़ि मैथिलीमे अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि, राधाकृष्णन-मूर ग्रन्थक आधारपर।

### १.अ. पद्यांश

केओ नहि तखन छल / नहि निर्जीवो / वायु नहि / नहि छल आकाश  
ओकर उपर /

की छल गुप्त / कत ? / ककर संरक्षणमे / आ छल गहीर, अमाप्य सागर?

मृत्यु तखनो नहि छल / नहि छल अमर जीवन /

सांस लैत छल वायुहीनतामे / ओकर अतिरिक्त एत' कोनो वस्तु नहि छल।

शुरुमे ओहिमे प्रवेश कएल इच्छा / ई सोचि / सर्जनक सर्वप्रथम बीज  
छल।

के जनैत अछि निश्चित रुपस'? / के एकरा स्पष्ट करत? / कहिया जन्म  
लेलक / आ कहिया बनल ई सृष्टि?

ईश्वरे ई जनैत छथि / आ शायद ओहो नहि जनैछ!

### १.आ. अनुवाद-कौशलक विश्लेषण

ऋग्वेद मूलक 'नासदासीन्नो सदासीत्तदानीम्' (न सत् आसीत् न असत् आसीत्)  
- 'तखन ने होइत छल ने नहि होइत छल'- यएह सृष्टि-पूर्व-अवस्थाक नेति  
(नकारात्मक नै) वर्णन कापड़िक अनुवादमे बदलि गेल 'केओ नहि तखन छल /  
नहि निर्जीवो।' ई छोट-छोट, खण्डित पंक्ति- अनुवादक नहि, पुनर्सृजनक लक्षण  
थिक।

मूल संस्कृतक 'आनीदवातम् स्वधया तद् एकम्' (वायुहीनतामे ओएह एक साँस  
लैत छल)- कापड़ि लिखै छथि 'सांस लैत छल वायुहीनतामे।' ई एक पंक्ति  
मैथिलीक गहनतम विरोधाभास-काव्य (Oxymoron poetry) थिक।  
वायुहीनतामे साँस- यएह विरोधाभास सृष्टि-पूर्वक अकथनीयताकें व्यक्त  
करैछ।

### १.इ. रस-विश्लेषण

भरत मुनिक नवरसमे 'अद्भुत' रस - जे आश्चर्यक भावसँ उत्पन्न होइछ - एहि कवितामे सर्वत्र व्याप्त अछि। 'सर्जनक सर्वप्रथम बीज छल'- यएह उक्ति अद्भुतरसक चरमोत्कर्ष थिक। परन्तु अन्तिम पंक्ति - 'ईश्वरे ई जनैत छथि / आ शायद ओहो नहि जनैछ!' - अद्भुत रसक 'करुण'मे बदलि दैछ - अज्ञानक करुणा।

### १.ई. नव्य-न्यायिक दृष्टि

गंगेश उपाध्यायक 'प्रमाण-सीमा' (Epistemological Limit) सिद्धान्तक अनुसार -प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द -ई चारू प्रमाण सृष्टि-पूर्वक ज्ञान देबएमे असमर्थ अछि। 'के जनैत अछि निश्चित रूपस'?' - ऐ प्रश्नमे नव्य-न्यायक 'ज्ञान-सीमा' (Cognition Limit) स्वयं कापडिक अनुवादक माध्यमसँ ध्वनित होइछ।

### १.उ. ध्वनि-विश्लेषण

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार, एहि कवितामे तीन ध्वनि-स्तर अछि: (अ) शाब्दिक -सृष्टि-पूर्वक भौतिक वर्णन। (आ) रूपकात्मक- मानव-अज्ञानताक चित्रण। (इ) दार्शनिक व्यञ्जना - 'ईश्वरो नहि जनैछ' -यएह अज्ञेयवादक (Agnosticism) गहनतम ध्वनि थिक। मैथिली साहित्यमे ऐ स्तरक दार्शनिक-काव्य अत्यन्त दुर्लभ अछि।

### १.ऊ. विदेह दृष्टि

मैथिली कवितामे वैदिक दर्शनक ई साहसी अनुवाद-परम्परा दुर्लभ अछि। विद्यापतिक बाद -जे संस्कृत आ अवहट्टक बीच सेतु बनेलथि - कापडि ऋग्वेदक सर्वाधिक रहस्यमय सूक्तकैँ मैथिलीमे उतारि एक नव परम्पराक आरम्भ करै छथि। ई विदेह समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण अध्याय थिक।

## २. मौलिक दोहा/मुक्तक

### २.अ. राजनीतिक दोहा

घंटी बाजल, राजनीति टनमन भेल। बहुते दलके देखू जीबिते मइर गेल।।

ई दोहा कापडिक राजनीतिक व्यंग्यक सर्वश्रेष्ठ काव्य-अभिव्यक्ति थिक। दुइ पंक्तिमे एक पूर्ण व्यंग्य-चित्र।

'घंटी बाजल' - चुनाव-घंटी। 'राजनीति टनमन भेल' - नव उत्साह। 'जीबिते मइर गेल' - राजनीतिक दलक नैतिक मृत्यु। ई तीन क्रम मात्र दुइ पंक्तिमे - इएह दोहाक क्षमता थिक।

कुन्तकक वक्रोक्ति - 'जीबिते मइर गेल' - जीवितावस्थामे मृत्यु - यएह विरोधाभास (Paradox) राजनीतिक नैतिकताक पतनकेँ एक चित्रमे बन्द करैछ। नेपालक राजनीतिक वास्तविकता - जतए दल चुनावमे हारल तखन नहि, आत्मा मरलापर 'जीबिते मइर' गेल - ई आधुनिक मैथिली दोहाक श्रेष्ठ उदाहरण थिक।

### २.आ. लोकोक्ति-मुक्तक

भरि गाम ओझा चलब केकर सोझा! ई दुइ-पंक्तिक लोकोक्ति-मुक्तक शहीद-दिवसक सन्दर्भमे कहल गेल अछि। 'भरि गाम ओझा' - गाममे सभ अपनाकेँ विशेषज्ञ मानैछ। 'चलब केकर सोझा' - तखन मार्गदर्शन कत्तऽ सँ?

कापडि एहि लोकोक्तिकेँ आन्दोलन-विमर्शमे प्रयोग करै छथि। नेपालमे अनगिन शहीदसभ 'आन्दोलन'क नेतागण-परन्तु वास्तविक नेतृत्व-शून्यता। ई उपमा-प्रयोग (Metaphorical Application) काव्यिक-राजनीतिक विमर्शक उदाहरण थिक।

भरतक नाट्यशास्त्रक 'हास्य रस' - परन्तु उपर-हास्य, भीतर करुण - इएह मिश्रण 'भरि गाम ओझा'क रसनिष्पत्ति थिक।

## २.इ. माय-मुक्तक

मायसन माय नै। मायसन केउ नै।

मात्र छह-सात शब्दमे -'माय' (माँ) शब्दक अनन्त महिमा। ई लघुतम काव्य - परन्तु भावक सघनता सर्वाधिक। 'मायसन माय नै' - तुलनाक अनुपस्थिति (Absolute Uniqueness) - माँसँ बड़ कोनो माय नहि।

करुण-रसक आधार - वात्सल्यक चरम। भरत मुनिक 'वात्सल्य स्थायी भाव' - जे भारतीय काव्यशास्त्रमे 'करुण' अन्तर्गत आबैछ - ई दुइ पंक्तिमे घनीभूत अछि। ई मातृ-दिवसक अवसरपर कहल गेल - परन्तु ओहिसँ परे, कालातीत सत्य थिक।

## २.ई. जन्मदिन-श्लोक

आई छठि के पारण दियावाती (लक्ष्मीपूजा) मे माई के जनमदिन छठि परमेश्वरी के पारण मे बाउ के जनमदिन दुन्नूके नामो जन्मदिने अनुरूप, लक्ष्मीपूजामे भेने लक्ष्मी आ छठि पारणमे भेने परमेश्वर

पुत्र (कुमार भास्कर) द्वारा पिता-माताकेँ जन्मदिन-श्रद्धा। ई रचना कापड़िकृत नहि, बरु हुनकर पुत्रकृत। एहि प्रसंगमे एक महत्त्वपूर्ण काव्यात्मक तथ्य अछि: लक्ष्मी (माँ) आ परमेश्वर (पिता) -नामानुसार पावनि - लक्ष्मीपूजापर माँक जन्म, छठि-पारणपर पिताक जन्म। ई संयोग-काव्य (Coincidence Poetry) मैथिली परम्परामे विशिष्ट थिक।

३. बालगीत -'हमर जनकपुरधाम'[(हमर मैथिली पोथी, तेसर किलास) ] आ 'सीता अवतार' [भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक' (मैथिली बाल रामायण)]

## ३.अ. 'हमर जनकपुरधाम'

लवकुशके मामा गाम / सएह थिक हमर जनकपुरधाम धियासिया आदर्श कएलनि / पुण्य ई मिथिला भूमिक नाम विदेह जनकक ई राजधानी / जनमौलक अगबे सज्ञानी मधुसन मीठ मैथिली भाषा / बजनिहार मैथिल स्वाभिमानी।

ई बालगीत 'हमर मैथिली पोथी, तेसर किलास'मे संकलित अछि। कापड़ि एकरा उद्धृत करै छथि -इएह उनकर बालसाहित्य-चेतनाक प्रमाण थिक।

'लवकुश के मामा गाम' -जनकपुरकें लव-कुशक ननिहाल (मामाक घर) कहबाक काव्यिक परम्परा मैथिलीमे पुरान अछि। ऐ बालगीतमे ई परम्परा सहज रूपसँ आबैछ।

'मधुसन मीठ मैथिली भाषा' - ई उपमा अद्वितीय थिक। मधु (मध) सन मीठ-स्वरक माधुर्यकें खाद्य माधुर्यसँ तुलना- ई संवेदना-तन्त्रक अन्तर-विपर्यय (Synaesthesia) थिक।

रसः वीर रस - 'मैथिल स्वाभिमानी' - स्वाभिमानक उद्बोधन बालमनमे वीरत्वक बीज रोपैछ।

३.आ. 'सीता अवतार' (भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक', मैथिली बाल रामायण)

सीता लेल कोना अवतार / सुनू कथा अछि बड़ विस्तार जखन कैल  
निशिचर उतपात / धर्मकर्म सब भेल निपात

मिथिलामे वर्षा नहि भेल / तखन जनक हर हाथहि लेल जखनहि जोतै  
लगला भूमि / तखनहि भेल प्रगट धतिभूमि

गुंजित भेल गगनस' वाणी - जगदम्बा अवतार लेलनि दनुज बढल धरतीपर  
-हरती भूमिक भार धरती माता नृपति जनककें देलनि नव उपहार कष्ट शोक  
दुखस' जग पाबि सकल उद्धार

कापड़ि एहि बालगीतकें उद्धृत करै छथि -आ ई सटीक चयन थिक। 'सीता अवतार' मैथिली बाल-रामायणक एक महत्त्वपूर्ण गीत अछि जे रावणक रक्त-कलशसँ सीताक जन्मक पौराणिक कथाकें सरल-सुगम लयमे कहैछ।

'जखनहि जोतै लगला भूमि / तखनहि भेल प्रगट धतिभूमि' -यएह दुइ पंक्ति बालगीतक सर्वोत्तम भाग थिक। 'धतिभूमि' (धरातलसँ प्रकट) -ई मैथिलीक विशिष्ट शब्द-प्रयोग थिक। लय, तुक, आ भाव -तीनू संतुलित अछि।

अन्तिम चतुर्दल (Quatrain) -'गुंजित भेल गगनस' वाणी' -दीर्घ पंक्तिमे भव्यता आबैछ। यएह लयक उत्थान-पतन (Rhythmic variation) बालगीतकै एकघेघाहपनसँ बचाबैछ।

#### ४. 'रेड-रेड'क गीत-फकड़ा

घेघहा भेम्ह बजनिजा, गिरगिट लोकनिजा कुदका बेड कहरिया मूसा सजल बरियात हे!

जुग जग हँसौनिजा बाप पगडी खसौनिजा लाढो मुसरी बियाहन बिल्लीमे चलल बरियात हे!

#### ४.अ. फकड़ाक स्वरूप

ई 'रेड-रेड' नाटकक गीत-फकड़ा थिक। मैथिलीक 'फकड़ा' परम्परा -लोकगीतक एक विशिष्ट रूप -जाहिमे जानवर-पात्रद्वारा मानव-समाजपर व्यंग्य कएल जाइछ।

#### ४.आ. प्रतीक-विश्लेषण

'घेघहा भेम्ह' (गला फुलाएल) -राजनेताक आत्म-प्रशंसा। 'गिरगिट लोकनिजा' -रंग बदलनिहार राजनीतिज्ञ। 'कुदका बेड' (छलांग लगाइत बेंग) -अवसरवादी। 'मूसा सजल बरियात' -माउस-बारात -मूसक बारात बिल्ली-घर जाइत! -ई परम्परागत मैथिली 'बिड़बंबनी' (Burlesque) थिक।

'बाप पगडी खसौनिजा' -पिताक प्रतिष्ठाकै नष्ट करनिहार। 'लाढो मुसरी बियाहन' -उच्छृंखल विवाह-बंधन। 'बिल्लीमे चलल बरियात' -बिल्लीक दरवाजेपर बारात -हास्य-रसक चरम।

#### ४.इ. लोकनाट्य-परम्परासँ सम्बन्ध

मैथिली लोकनाटकमे 'नटुआ' परम्परा -जाहिमे जानवर-मुखोटा पहीरि समाज-व्यंग्य कएल जाइछ -एहि फकड़ाक जड़ि ओहिसँ जुड़ल अछि। कापड़ि एहि प्राचीन परम्पराकै आधुनिक राजनीतिक थिएटरक सन्दर्भमे जीवन्त करै छथि।

## ५. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक हिन्दी गजल -कापड़िक पाठकीय समीक्षासँ

### ५.अ. गजलक पाठ

कि धीरज पाल रे बन्धु / जरुरत टाल रे बन्धु खुशी हैं गमका साथी /  
समय को चाल रे बन्धु

हैं जो भी दिया खुदाका / उसे संभाल रे बन्धु रखा हैं क्या रंजिश में / जहन  
से निकाल रे बन्धु

बेखुदी की खुद में ही / खुदी खंगाल रे बन्धु डूबके प्रेम में हो जा / तू माला  
माल रे बन्धु

हैं गर 'प्रेमर्षि' बनना / जिगर रख लाल रे बन्धु

### ५.आ. कापड़िक समीक्षा-दृष्टि -स्वयं एक काव्यात्मक गद्य

कापड़ि एहि गजलकें पढ़िकऽ जे 'पाठकीय उहापोह' लिखलनि -जे स्वयं एक काव्यात्मक गद्य थिक। हुनकर पहिल प्रतिक्रिया -'तेसर पंक्तिपर पग दैते, मोह भंगसँ मन खटा गेल जे आहि रे वा, ई त' हिन्दी गजल अछि' -ई एक मैथिली-प्रेमीक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थिक।

परन्तु तत्पश्चात् कापड़ि अपन संकीर्णता स्वीकार करि, गजलकें वस्तुनिष्ठ दृष्टिसँ देखै छथि: 'हिनक रचनाक भाषा-साहित्यक सौष्ठवके समग्रताके निरेखने अवधारने, मान' पड़त जे एहि रचनाके माध्यमसँ हिनक भाषिक रवानी गजलक रचनागत विन्यास बेछप आ सरस अछि।' ई आत्म-सुधार (Self-correction) कापड़िकें एक ईमानदार समीक्षक साबित करैछ।

### ५.इ. गजलक काव्यगत विश्लेषण

'खुशी हैं गमका साथी' -यएह शेर (couplet) सूफी परम्पराक 'फना' (आत्म-विलोपन) दर्शनसँ जुड़ल अछि। खुशी आ गम -विरोधी -परन्तु साथी -ई विरोधाभास-सौन्दर्य (Paradoxical aesthetics) उर्दू गजलक मूल आत्मा थिक।

'बेखुदी की खुद में ही / खुदी खंगाल' - 'बेखुदी' (Self-loss) में 'खुदी' (Self) दूढ़ब -ई सूफी आत्म-साक्षात्कारक पद्धति थिक। मीरा, कबीर, रहीमक परम्परा -जाहिमे कापड़ि प्रेमर्षिकें राखि देलखिन -उचित थिक।

कापड़िक तुलनात्मक टिप्पणी - 'हिनकामे बहुते मीरा, तुलसीदास, आ सूरदासक निर्मल मनक युगसंचेतना देखाइ दैत अछि' -ई मैथिली आलोचनाक उत्कृष्ट उदाहरण थिक।

## ६. डा राजेन्द्र विमलक मैथिली गजल -कापड़िक विस्तृत समीक्षा

### ६.अ. गजल-१: क्रान्तिक आह्वान

जोड़ि बाँहि बाँहस', जोरस' आवाज दियौ रोटी चोरओने अछि, पेट ओकर फाड़ि लिय।

बहिरा करैत अछि, डँसैत रहत, पुजू नहि घेंटे छपटि दियौ, हाथमे तरुआरि लिय।

हमर खून जे पीलक, कए देबै खून तकर अपन खून-खूनमे, धधरा पसारि लिय।

रावण-बध धर्म थिक, जरत पापके लंका डंका से पीटि-पीटि, धर्म-ध्वजा गाड़ि लिय।

शब्दक हुक्कालोली, भजिते हम रहब विमल चेतनाक दीपावली, सजा आ' सिडारि लिय।

### समीक्षा

कापड़ि एहि गजलकें 'बहुत आक्रमक तथा विष्फोटक' कहै छथि -ई सटीक वर्णन थिक। 'घेंटे छपटि दियौ, हाथमे तरुआरि लिय' -ई रौद्र-रसक चरमोत्कर्ष थिक। भरत मुनिक रौद्र-रस -'क्रोध' स्थायी भाव -एहि शेरमे प्रचण्ड रूपसँ उपस्थित अछि।

'रोटी चोरओने अछि' -शोषण-विमर्श। 'पेट ओकर फाड़ि लिय' -रूपकात्मक प्रतिशोध -शाब्दिक हिंसा नहि, काव्यिक न्याय-माँग। वक्रोक्ति-दृष्टि: 'धर्म-ध्वजा गाड़ि लिय' -प्रतिरोधकें धर्म-युद्ध (Dharmic war) कहब -यएह वक्र-प्रतीकतन्त्र थिक।

#### ६.आ. गजल-२: 'मार सार दोगलाके' -व्यंग्य-गजल

ठाँय ठाँय गोली, मार सार दोगलाके दैत छौक बोली, मार सार दोगलाके।

चास-बास, बेटी-पुतहुधरि ने छोड़तउ ओढ़ने छौ खोली, मार सार दोगलाके।

पुरखा-दर-पुरखा, बस घेंट रेतलकौ छौ घेंटकट्टा-टोली, मार सार दोगलाके।

ऐ गजलमे 'मार सार दोगलाके' -पाँचोपर एकहि रदीफ (Refrain) -यएह रिपीटिशन तकनीक रौद्र-रसकें प्रचण्ड करैछ। 'चास-बास, बेटी-पुतहुधरि' -अर्थात् जीवनक सभ किछु -सर्वग्रासी शोषण। 'घेंटकट्टा-टोली' -गला काटनिहारक दल -ई मैथिलीक विशिष्ट गारि-शब्द जे काव्यमे प्रयुक्त होइछ -साहसिक भाषाई प्रयोग थिक।

#### ६.इ. गजल-३: 'छै कोन लोकक बस्ती'

छै कोन लोकक बस्ती, सभ लोक एतए घायल छै छै खोपरीपर ताला, आ जीभ सभक काटल छै।

लटकि चलै लोक एतए, हँज बान्हि सूलीपर छै कोन शहर, जतए लोक स्वेच्छास' टाँगल छै।

बदलै छै संविधान रोज, वेश्याक नया लहङासन नूआ हमर मतारिके, एखनो धरि फाटल छै।

ई गजल विमलक सर्वश्रेष्ठ थिक। 'बस्ती जतए सभ घायल' -ई उद्घाटन-शेर (Mataala) अद्भुत थिक। 'खोपरीपर ताला, जीभ काटल'- मानसिक-वाचिक दासताक रूपक। 'लटकि चलै हँज बान्हि सूलीपर' -यएह सूली-उपमा (Crucifixion metaphor) आधुनिक मैथिली गजलमे नव थिक।

'संविधान बदलै रोज, वेश्याक नया लहङासन' -'वेश्या-संविधान' उपमा -अत्यन्त विवादास्पद, परन्तु काव्यिकतः अत्यन्त प्रभावशाली। 'नूआ हमर मतारिके एखनो धरि फाटल' -गरीबीक यएह व्यक्तिगत-सार्वजनिक बिम्ब (Personal-Universal image) विमलकें महान बनाबैछ।

#### ६.ई. गजल-४: 'तखने दीवाली थिक'

जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली थिक चेतनाक दीप बरए, तखने दीवाली थिक।

जीर्ण आ पुरातनकें, हुक्कालोली बनाउ पलपल नव दीप जरए, तखने दीवाली थिक।

तमिस्राकेर सूत्रधार! सावधान! सावधान! राकेट बम उड़ि लड़ए, तखने दीवाली थिक।

ऐ गजलमे 'तखने दीवाली थिक' -रदीफ -प्रत्येक शेरमे दीवाली-उत्सवकें एक नव शर्तसँ जोड़ैछ। 'चेतनाक दीप' -बौद्धिक जागरण। 'हुक्कालोली' -लोकभाषाक ई शब्द (खुलेआम उपहास) गजलमे दुर्लभ थिक -लोकभाषा आ उर्दू-गजल परम्पराक मेल।

'राकेट बम उड़ि लड़ए, तखने दीवाली थिक' -दीवालीक आनन्द-पर्वमे बम-विस्फोटक प्रतीक -ई रचनाक सभसँ वक्र उक्ति थिक। 'अन्धकारक सूत्रधार' कें सावधान करब -क्रान्तिकारी चेतनाक काव्यिक उद्बोधन।

#### ६.उ. गजल-५: 'इनकिलाब गगनमे'

इनकिलाब गगनमे के लीखि टडै छै, सोनितसँ धरती-आसमान रडै छै।

हमर चान-ताराकेर कविताकेर खून कए के जीवनमे नफरतकेर ग्रन्थ तगै छै?

भूखलसँ नीक मरय गोली खा लोक इएह सत्य बूझि ओ मृत्यु चुगै छै।

'इनकिलाब गगनमे के लीखि टडै छै' -ई उद्घाटन-शेर मैथिली गजलक इतिहासमे स्मरणीय थिक। 'सोनितसँ धरती-आसमान रडै छै' -खूनसँ आकाश-धरती रंगाएल -ई बिम्ब क्रान्ति-काव्यक उत्कर्ष थिक।

'कविताक खून' -कविताकें जीवित प्राणी मानिकऽ हुनकर हत्याक आरोप -ई Personification आधुनिक मैथिली कवितामे विरल थिक। 'भूखलसँ नीक मरय गोली खा' -यएह निर्दयी यथार्थवाद (Brutal realism) -जे जीवनक गरीबी-त्रासदीकें बिना अलंकारक कहैछ -महान काव्य-उक्ति थिक।

परमेश्वर कापडि जकडा गजल संग्रह ['सूर्यास्तसँ पहिने' स'- राजेन्द्र विमल]  
कहि रहल छथि से अछि गीत संग्रह। दोहा, कुण्डलिया, रोला सन गजल सेहो  
विधा थिक जे नहिये राजेन्द्र विमल सीखि सकलाह नहिये धीरेन्द्र प्रेमर्षि। आव  
देखू ई तथाकथित बाल गजल राजेन्द्र विमलक संग्रहसँ:

अओ हजूर  
खाउ खजूर  
अपने मालिक  
हम मजदूर  
सत्ताक दारू  
चूरमचूर  
हमरे नोकर  
हमहीं दूर  
हमरा दगैए  
हमरे घूर  
पाँच बरखधरि  
कानमे तूर  
अबै छौ फेरो  
पकडिक' थूर  
गरीबक मन नइ  
होएतै पूर  
पोंपों गडीमे  
करियौ दूर  
भोंटक बक्सा  
क' देत भूर  
अओ नेताजी  
आएब जरूर  
एमरी धासब  
लाठीक हूर

आ रे कौआ

आ रे कौआ आ'- आ'- आ'

उडि उडि आ, दौड दौडि आ

आ रे चिडैया उडि -उडि आ

हमरा बौआके नाचि क देखा

आ रे सुगा आ'- आ' - आ'

आ रे मैना आ'- आ' - आ'

सुगा मैना उडि - उडि आ

आम लताम खोधि खसा

मैना आएल सिलोरिया

सुगा आएल हरियरिया

जामुन गिरएलक करिया

बौआ बिछलक झोरिया

बौआ पोती

हम्मर ई बौआ पोती

हरख आनन्दक ज्योती

खाएत परौठा रोटी

देत ने केकरो खोंटी

देख'मे बड छोटी

बात बाजत पकठोसी

चट खेलत पट कानत

हँसत त' हीरा - मोती

डिजिटल गेम खेल खेलौना

'टच' 'क्लीक' के गोटी

ई एकटा नीक बालगीत भऽ सकैए बाल गजल नै।

७. संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवाद

७.अ. गीताक श्लोक - 'पिता हमस्य जगतो' (रचना-क्र. ८६)

पिता हमस्य जगतो माता धाता पितामहः। वेद्यं पवित्र ओंकार ऋक्सामयजुरेव ॐ ॥

मैथिली भावानुवाद: 'हमही सम्पूर्ण जगतके धाता अर्थात् धारण-पोषण कएनिहार एवं कर्म सबके फल देनिहार तथा पिता, माता आ पितामह छी आ जानबायोग्य पवित्र ओंकार तथा ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद हमहीं छी!'

कापड़िक अनुवाद-पद्धति: संस्कृतक संक्षिप्तता -एक श्लोकमे विश्वव्यापी सत्य -मैथिलीमे विस्तारपूर्वक व्याख्यात। 'धारण-पोषण कएनिहार' -'धाता'क अनुवाद -'धाता' शब्दक तीन-स्तरीय अर्थ (Dhata = Creator + Sustainer + Karma-giver) कापड़ि सभकेँ समाहित करै छथि।

७.आ. सीता-स्तोत्र - 'त्वं विद्या परमात्रैलोक्य जननी'

त्वं विद्या परमात्रैलोक्य जननी स्वर्गापवर्ग दायिनी। त्रैलोक्या कर्षणी देवी सीता देवी नमस्तुते ॥

मैथिली भावानुवाद: 'अहाँ परम तथा तीनू लोकक माता परम विद्या छी। अहीं स्वर्ग तथा अन्य विशिष्ट लोक प्रदायिनी छी। अहीं तीनू लोकके आकर्षणके केन्द्र छी। हे सीते अहाँके प्रणाम अछि!'

'त्वं विद्या' -'अहाँ... परम विद्या' -संस्कृतक तात्कालिक पहचान-उक्ति मैथिलीमे विस्तृत। 'त्रैलोक्या कर्षणी' -'तीनू लोककेँ आकर्षित करनिहारी' -'कर्षणी' शब्द चुम्बकीय शक्तिक अर्थमे -कापड़ि एहि जटिल शब्दकेँ सरल मैथिलीमे 'आकर्षणके केन्द्र' कहिकऽ सुलभ बनबै छथि।

### ७.इ. नारद-वचन -श्लोकक भावानुवाद

धर्माधर्म विवेकेन वेदमार्गानुसारिणी। सर्वलोकहितासक्ताः साधवः  
परिकीर्तिताः॥ -नारद, १६(२९-३१)

मैथिली भावानुवाद: 'जे आदमी धर्म आ अधर्मके विवेक क', वेदोक्त मार्गपर चलैछ, हुनका साधु कहल जाइछ।'

ई भावानुवाद कापड़िक अनुवाद-सिद्धान्तकेँ स्पष्ट करैछ -ओ शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद नहि करैछ। 'सर्वलोकहितासक्ता' -'सभ लोककेँ हित चाहनिहार' -ऐ एक पदक विस्तार कापड़ि तत्काल नहि करै छथि, कारण अनुवादक लक्ष्य -मैथिली पाठककेँ 'साधु' शब्दक परिभाषा बुझेनाइ -पूरा भऽ जाइछ।

### ७.ई. गंगासागर-स्तोत्र (पुराण)

गङ्गाद्यः सरितः सर्वाधिक स्त्रिषु लोकेषु विश्रुता। ता सर्वा अनपायिन्यो  
गङ्गासागर मण्डलले॥

मैथिली भावानुवाद: 'हे पार्वती! त्रिभुवनमे विख्यात गंगादिक जतेक महापवित्र नदी सब अछि ओ सब श्री मिथिलाके गंगासागर सरोवरमे निरन्तर निवास करैत अछि!'

ऐ श्लोकक उद्धरण कापड़ि जनकपुरक गंगासागर सरोवरक पौराणिक महत्त्वकेँ प्रतिपादित करैबाक लेल करै छथि। 'अनपायिन्यो' (निरन्तर बहैत) -कापड़ि 'निरन्तर निवास करैत' अनुवाद करै छथि -'निवास' आ 'बहब'क बीच अर्थ-विस्तार आश्चर्यजनक थिक। नदी बहैत नहि, निवास करैछ -ई अनुवाद-सृजन थिक।

८. सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसा आ 'दाम'- कथा-काव्य (साक्षी) [परमेश्वर कापड़ि द्वारा प्रस्तुत](विस्तृत पद्य-विश्लेषण)

'दाम' (साक्षी, अर्पण: विद्यापति सेवा संस्थान, २०१२) -मात्रावृत्त कथा-काव्य -पहिनेसँ समग्र कथाक रूपमे विश्लेषित भेल अछि। एत' केवल पद्य-शिल्पक दृष्टिसँ किछु महत्त्वपूर्ण पंक्ति:

छला एक लम्बोदर बाबू, पेट हुनक छल खत्ते। काजक नाम मारथि न माछी, हुरथि भरि थार तुरते ॥

'खत्ते' (खाली/भूखल) + 'तुरते' (तुरन्त) -तुकबन्दी सटीक। 'काजक नाम मारथि न माछी' -हास्य मुहावरा जे 'कोनो काज नहि करब'क लेल प्रयुक्त।

मुदा, एक दिन भेटलनि जखने, भेल राजाक फरमान। साजल गेल संग्राम-साज, हरु अरिदलक प्राण ॥

'साजल गेल संग्राम-साज' -स-पंक्ति अनुप्रास (Alliteration: स, ज, ज, ज) - छन्द-चेतनाक प्रमाण।

वैह रोटी देखौलक खेल, हरलक बघबाक जान। गलै प्राण अपटी सहजे, तें लम्बोदर महान ॥

अन्तिम पंक्ति -'तैं लम्बोदर महान' -व्यंग्यात्मक महानता-स्थापना। इएह विडम्बना (Irony) कापडिक हास्य-व्यंग्यक शैली थिक। : 'दाम' दीर्घ काव्य अछि परन्तु कथात्मक प्रधान अछि।

तहिना सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसापर परमेश्वर कापडि कहै छथि: “उछनरहा उपदरिया बच्चा त’ होइते अछि, ओकर बालसाहित्यमे सेहो बहुते हंसी-मजाक कोनो कम नै छै आ सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसा ओना छै त’ कने बेसी पुरान तैयो अपूर्व आ रोचक अछि।” सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसाक प्रारम्भिक पंक्ति:

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।

मम्मी हंसए, कानए फादर ॥

## १. समग्र मूल्यांकन -कापडिक कवि-व्यक्तित्व

### १.अ. शक्ति

(क) दार्शनिक गहराई: ऋग्वेद अनुवादमे -मैथिली काव्यमे अपूर्व। अज्ञेयवादक काव्यिक अभिव्यक्ति।

(ख) लोक-काव्य-परम्पराक जीवन्त उपयोग: फकड़ा, लोकोक्ति-मुक्तक - मैथिलीक जड़िसँ जुड़ल।

(ग) अनुवाद-सृजन: संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवादमे हुनकर 'रचनात्मक स्वतन्त्रता' -जे अनुवादकै पुनर्सृजन बनाबैछ।

(घ) समीक्षक-कवि: प्रेमर्षिक आजाद हिन्दी गजलपर हुनकर टिप्पणी/ राजेन्द्र विमलक गीत संग्रह (गजल संग्रह कहि कऽ प्रकाशित) पर टिप्पणी स्वयं एक काव्यात्मक गद्य थिक।

(ङ) राजनीतिक व्यंग्य-काव्य: 'घंटी बाजल' दोहा -आधुनिक मैथिली दोहाक उत्कृष्ट नमूना।

### १.आ. सीमा

(क) स्वयंकृत पद्य अत्यन्त अल्प: अधिकांश पद्य अन्य कविक- विमल, प्रेमर्षि, 'अध्यापक'- जकर समीक्षा कापड़ि करै छथि।

(ख) दीर्घ मौलिक कविताक अभाव।

(ग) बिम्ब-विधान: कापड़िक बिम्ब (imagery) लोककथा-परम्पराक बिम्ब थिक-भव्य आधुनिक बिम्ब-सृजनक अभाव।

### १.इ. विदेह समानान्तर इतिहासमे स्थान

परमेश्वर कापड़ि प्राथमिक रूपे कथाकार आ नाटककार, द्वितीयतः समीक्षक-कवि। तथापि हुनकर ऋग्वेद-अनुवाद ('तत्त्वबोध'), राजनीतिक दोहा, आ 'रेड-रेड'क फकड़ा - मैथिली पद्य-इतिहासमे हुनकर उल्लेखनीय योगदान थिक। विदेह समानान्तर इतिहास -'मुख्यधारा इतिहाससँ वञ्चित रचना' - एहि कवि-आलोचक-अनुवादककै समुचित मान दैछ।

## अध्याय ०३

### परमेश्वर कापड़िक रचना-संसार

आत्मकथात्मक लेखन, संस्कृति, व्यंग्य आ साहित्यिक चिन्तन

**भूमिका:** परमेश्वर कापड़ि आ हुनकर रचना-संसार

परमेश्वर कापड़िक ६०० सँ बेसी रचना - लोककथा, आख्यान, पौराणिक कथा, व्यंग्य, सांस्कृतिक निबन्ध, भाषा-विमर्श, आत्मकथात्मक प्रसंग, पुरस्कार-विमर्श, राजनीतिक टिप्पणी, आ नाट्य-समीक्षा ई सभ मिलिकऽ हुनकर एक विशाल, बहुआयामी रचना-संसारक निर्माण करैछ। विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टिक दृष्टिसँ कापड़ि ओहि 'छोड़ल गेल' मैथिली साहित्यकारक श्रेणीमे अबैछ जिनका मुख्यधारा साहित्यिक संस्था प्रायः उपेक्षित कएने अछि।

### १ आत्मकथात्मक आ पारिवारिक प्रसंग

#### १.४ 'पुण्यात्मा बाउ प्रसंग':

ई रचना कापड़िक सभसँ मार्मिक, आत्मकथात्मक रचना थिक। मरणासन्न पिताक संग पुत्रक अन्तिम क्षणक वर्णन - ई मैथिली गद्यमे भावनात्मक उत्कर्षक उदाहरण अछि। भाषाक सजीवता: 'जखैन हम पोताके क'र घुमैलिए', 'छटपटाइछै', 'बड़ीकाले', ई सभ मैथिलीक अपन शब्द थिक जे हृदयकें सोझै छूबैछ। बाउक वाक्य - 'मर' कालमे अहिना कछमछी जुआरि अबैहइ' - ई मृत्युक मुँहमे बैसि कएल व्यंग्य-प्रेम-प्रकाशन अद्भुत थिक। करुण रस: अभिनवगुप्तक 'करुण रसक परिणति' (Ultimate Resolution of Pathos) सिद्धान्तक अनुसार, पिताक मृत्यु - करुणाक उत्कर्ष - पुत्रकें यएह बोध दैछ: 'बाप शब्दक अर्थ भाव डिकशनरीमे नहि ताकल जा' सकैछ!' ई वाक्य भारतीय साहित्यक श्रेष्ठ उक्तिसभमे गनले जाएत। 'बाउ प्रसंग' मे लेखक अपन

प्रमोशनक चिन्तामे पिताक मृत्युकाल बिताबैछ - यएह मानवीय दुर्बलताक स्वीकार्यता 'यथार्थवादी' साहित्यक लक्षण थिक।

#### ६.१ 'हमरो घरमे मैथिलीक बड़ मान':

'सराइन' प्रसंग: कापड़ि अपन घरनीकेँ 'सराइन' (सर + स्त्रीलिङ्ग) कहै छथि। ई भाषाई नवनिर्माण मैथिलीक विशिष्ट उदाहरण थिक। 'जेना - मास्टरक स्त्रीलिङ्ग मास्टरनी, तहिना डागडरक डागडरनी, सिंहक सिंहनी!' - ई सादगी बला हास्य कापड़िक व्यक्तित्वक परिचायक थिक। ऐ रचनामे घरक जीवनक माधुर्य, 'जंतसारी गीत गबैत अदौरीक घाइत पिसैत बौआमाय' - ई चित्र मैथिली गद्यमे ग्राम्य जीवनक अनुपम दस्तावेज थिक।

#### ६.२ 'पहिने जनि-जति... अदौरीके घाइत':

पुरान आ नव घरनीक तुलनापर ई लघु रचना - 'लिखिया लिखिक' चिक्कन-दुढ़ुर' बनाम 'फैन्सी डेकोरेसन' - ई सांस्कृतिक परिवर्तनपर मार्मिक टिप्पणी थिक। 'अदौरीके घाइत आ तिसियौरीके बेसन पिसैत, जंतसारी गीत गबैत, हमर ई बौआमाय!' - ई चित्र मैथिलीक श्रेष्ठ गद्य-काव्यमे स्थान रखैछ।

#### ६.३ बौआ-बाबू-पोताक जनमदिन-प्रसंग:

'चिन्नीके लडू टेंदो, केहुना मीठे होइछ!' - कापड़िक दाइक ई उक्ति लोकज्ञानक उत्तम उदाहरण थिक। 'जे ननू से गर्भे ननू!' बौआ प्रभुकेँ 'पृथु' नाम राजा पृथुक आधारपर देबाक कारण बतेबाक शैली कापड़िक परम्पराबोधक परिचायक थिक।

### २ पुराण, दर्शन आ संस्कारक व्याख्या

#### २.२ 'पुराणोक्त परिभाषा':

नारद-स्मृतिसँ उद्धृत 'सत्य', 'धर्म', 'अहिंसा', 'असत्य', 'साधु' - ऐ पाँच तत्त्वक व्याख्या कापड़ि मैथिलीमे प्रस्तुत कएलनि अछि। 'धर्माधर्म विवेकेन वेदमार्गानुसारिणी: / सर्वलोकहितासक्ता: साधव: परिकीर्तिता:' - नारदक श्लोकक समावेश समीचीन थिक। ई रचना कापड़िक पाण्डित्यक प्रमाण थिक। ओ केवल लोककथाकार नहि, बरु शास्त्रीय परम्पराक ज्ञाता सेहो छथि। विदेह दृष्टिमे, ई शास्त्र-परम्परा आ लोकपरम्पराक समन्वय कापड़िक विशेषता थिक।

### २.३ 'छिन्नमस्ता भगवतीक तान्त्रिक स्वरूप':

ई कापडिक सर्वाधिक विद्वत्तापूर्ण रचना थिक। मिथिला चित्रकलाक आधारपर छिन्नमस्ताक तान्त्रिक व्याख्या- सृष्टि-ध्वंस-पुनर्निर्माणक दार्शनिक व्याख्या- अत्यन्त गहन थिक। 'प्रकाश आ ध्वनिक अन्तर्प्रक्रिया एतेक भयानक आ प्रचण्ड होइत अछि जे सृजनक सम्बन्ध सर्जकस' एके झटकामे विच्छिन्न भ' जाइछ।'- ई वाक्य भारतीय तान्त्रिक दर्शनक मर्म थिक। 'माता आ शिशुक बीचक नाभिनालकें जाधरि काटल नहि जाइछ ताधरि नवजात शिशु स्वतन्त्र अस्तित्वमे आबि नहि सकैत अछि।' - ई जैविक रूपक छिन्नमस्ताक तान्त्रिक प्रतीकतन्त्रकें अद्वितीय तरीकासँ स्पष्ट करैछ। कापडि मिथिला-चित्रकलाक तान्त्रिक आधारकें वैज्ञानिक-दार्शनिक दृष्टिसँ व्याख्यायित करै छथि। ई मैथिली साहित्यमे दुर्लभ अछि।

### २.४ 'आयुर्वेद आ धनतेरस':

ब्रह्माजीक आयुर्वेद-रचना, त्रिसूत्र, आत्रेय-धान्वन्तर सम्प्रदाय, आ क्षीरसागर-मन्थनक वर्णन - ई रचना कापडिक शास्त्रीय ज्ञानक प्रमाण थिक। 'तिलासंक्रान्ति मनक पावनि अछि', 'फगुआ मनक पाबनि', 'दुर्गापूजा आत्माक' - ऐ तीन-भागक वर्गीकरण कापडिक दार्शनिक दृष्टिक परिचायक थिक।

### २.५ 'विवाह-संस्कार आ अधिकार':

विवाहक व्युत्पत्ति - 'वि+अव+हार' - आ कन्यादान-पाणिग्रहण-होमक दार्शनिक व्याख्या कापडि बहुत विद्वत्तापूर्वक कएलनि अछि। 'आब एहिमे जहियास' आय आ अधिकार तत्व दुकलैए जीवन भार आ भाउर भ' गेल अछि' - ऐ अन्तिम वाक्यमे आधुनिक विवाह-विमर्शक व्यंग्यात्मक टिप्पणी अछि।

### ८.१ 'आल्हा-रुदल':

पाण्डवक पाँचोभाइक कलियुगमे आल्हा-रुदल-ब्रह्मानन्द-लाखन-वीर मलखान रूपमे अवतरणक कथा - ई पौराणिक-लोकगाथाक सुन्दर समन्वय थिक। युधिष्ठिरक अतृप्त अभिलाषाकें - 'महाभारतमे हम कहाँ एकोटा कौरव मार' पड़ली!' - कृष्ण कलियुगमे पूरा करैछ। ई आख्यान मैथिली लोकगाथा-परम्पराकें

दार्शनिक आधार दैछ। आल्हा-रुदल लोकगायनक ब्रह्माण्डीय सन्दर्भ - पाण्डव-पुनर्जन्म - एकरा केवल मनोरंजनसँ उपर उठाबैछ।

### ३ भाषा, लोकसंस्कृति आ जनकपुरधाम

#### ३.१ 'भारु की मोरु?!':

ई कापडिक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक निबन्धक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। भारु (भारतीय रुपैया) आ नेरु (नेपाली रुपैया)क अर्थ-विस्तार करैत ओ विद्यापति आ मलंगियाजीक नेपाल-भारत द्विधाक प्रसंगमे मैथिली साहित्यिक इतिहासक पुनर्विचारक निमन्त्रण दैछ। 'विद्यापति नेपालमे आबि, घर-घरारी अरजि, पोखरि इनार खना, कृतकार्य क' ध', आजीवन विद्यापति एतहि मरि-खपि गेलाह, तैयो उ भारु?' - ई प्रश्न मैथिली साहित्यिक राष्ट्रवादक मर्मकें छूबैछ। कापडि मैथिली-नेपालक पहचानकें स्वतन्त्र आ स्वाभिमानी रूपमे स्थापित करबाक पक्षमे छथि। महेन्द्र मलंगियाजीक गिनिज-बुक प्रमाणपत्र-प्रसंगमे कापडि एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठबै छथि: 'मलंगियाजीके नाट्य माइजन' कहल जाओ तखन कि हुनका 'नेपालक मैथिली नाटककार' कहब अनुचित अछि? ई मैथिली-नेपाल राजनीतिक पहचानक विमर्श थिक।

#### ३.२ 'मैथिली लोकरंगमंच':

मैथिली लोकनाट्यपर कापडिक निबन्ध मैथिलीक रंगमञ्च-इतिहासक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक। 'मैथिली संस्कृतिक अपन विभिन्न अवयव आ उपादानसब छै, माने लोकभाषा, लोक नाच नाट्य, गीत गाथादि' - ई वाक्य मैथिली सांस्कृतिक समग्रताक दृष्टि प्रकट करैछ।

'परबहा' गामक वर्णन: 'परबाह अहा' - ई नामव्युत्पत्ति रोचक आ सांस्कृतिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। जे लोक अपन भाषा-साहित्य-संस्कृति-रंगमञ्चक परबाह करैछ, - ओ 'परबहा' थिक। शब्द-विलासक ई उदाहरण कापडिक भाषा-चेतनाक परिचायक थिक।

### ३.३ 'लोकभाषा मैथिली की जय!':

ई कापड़िक भाषा-चिन्तनक श्रेष्ठ उदाहरण थिक। 'वेद-पुराण, धर्म-दर्शन आ कला-विज्ञानक भाषा देववाणी... एतेक ने सकबेधक' गछेरल रहैक, जे मरि गेलै - ई संस्कृतक मृत्युक समाजशास्त्रीय व्याख्या थिक। कापड़ि मैथिलीक भविष्यकै लोकभाषाक रूपमे देखैछ, ने कि 'बभन-भाषा' (मानक मैथिली)क रूपमे। ऐ रचनामे कापड़ि डा रामावतार यादवक 'मानक मैथिली' आन्दोलनपर सूक्ष्म व्यंग्य करै छथि - 'बोडपादी ऐंठलक बभन-भाषा'। विदेह समानान्तर दृष्टिक दृष्टिसँ ई विमर्श महत्त्वपूर्ण थिक: मैथिलीकै लोकक भाषा रहबाक चाही, ने कि पण्डित-शास्त्रीक।

### ३.४ 'सीतासखी गंगासागर':

जनकपुरक गंगासागर सरोवरक दुर्दशाकै कापड़ि पौराणिक-काल्पनिक कथाक रूपमे प्रस्तुत करै छथि। गंगासागर 'झखरी बुढियाक रूप धऽ' महाकुम्भ जाइछ - ई प्रतीकात्मक कल्पना अद्भुत थिक। ओत' गंगाजलक शुद्धतासँ आत्मग्लानि होइछ आ जनकपुरवासी सबकै कोसै छहि। ई व्यंग्य-कथन सहर-नगरपालिकाक उपेक्षापर टिप्पणी थिक।

### ६.४ 'जनकपुरधाम विकास-विमर्श':

कापड़ि मिथिला आन्दोलनी शहीद दिवस: जनकपुर उपमहानगरपालिकाक बदहाली, परबहा महोत्सव- ऐ सभपर सतत लेखन करै छथि। ई समाज-प्रतिबद्धताक उदाहरण थिक। 'मिथिला शहीद अमर रहए!' - ई आह्वान-वाक्य मात्र नारा नहि, कापड़िक जीवन-दर्शन थिक। ओ मिथिला राज्य-संघर्ष समितिक संयोजक रहिचुकल छथि - ई प्रतिबद्धता हुनकर साहित्यमे सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ।

विराट मैथिली नाट्य कला परिषद्, जनकपुरधाम अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य महोत्सव, परबहा सांस्कृतिक महोत्सव - ऐ सभपर कापड़िक लेखन मैथिली नाट्य-इतिहासक समकालीन दस्तावेज थिक। ओ केवल दर्शक नहि, सक्रिय सहभागी आ आलोचक छथि।

कापडिक महत्त्वपूर्ण नाट्य-चिन्तन: 'जनकपुरमे अभिनेता/अभिनेत्री बहुते छथि, धरि आधुनिक वैश्विक रंगमंच, रंग-दर्शन, नाट्य-संचेतना, कलावाद, एकर मुख्य प्रवृत्ति...क अभाव' - ई सटीक निदान थिक।

#### १.१ 'आनन्द मनोरंजनस' उमटाम भरल-पूरल बाल लोकसाहित्य':

कापडि मैथिली बाल-लोकसाहित्यक महत्त्वकें रेखांकित करै छथि। 'ई कहियो नै सठ', निडहट'बला अकूत अनमोल नैसर्गिक सम्पदा अछि' - ई वाक्य बालसाहित्यक प्रति हुनकर गम्भीर दृष्टिक परिचायक थिक। रोशन जनकपुरीजीक नातिक खेलगीत - 'रे बौकला, रे बौकला! / किए टोकले?' - ई बालगीतक रिदम, अटर-पटर-पन मैथिली बालगीतक विशेषता थिक जे कापडि सहेज रखलनि अछि।

#### ४ राजनीतिक व्यंग्य आ सामाजिक आलोचना

##### ४.१ 'एहने जनकपुर?':

जनकपुर उपमहानगरपालिकाक बदहाल सड़क, मच्छर-पालन, आ नेताक उदासीनतापर ई व्यंग्य अछि। 'महान उपमहानगरपालिकाक वडा नं. १६ पुलचौकक, २०५१ सालमे... बिलटू पजियारक बिकट पालीमे धाके-धौसे... मटिया सड़क निर्माण भेलै, तकर किछु छेंट... ऐ तीस बरखक अभ्यन्तरमे, एको छौ/टेलर माटि नै पड़ने' - ई लेखन स्थानीय पत्रकारिताक श्रेष्ठ उदाहरण थिक। 'तब, हे यौ जनकपुर! विकास नामक सूरदासके घीउ, पातपर गड़गरएनहि बूझब!?' - ई 'सूरदासके घीउ' मुहावरा मैथिली व्यंग्य-साहित्यमे एक मणि थिक। विकासक घीउ - जे अन्धकै नहि देखैछ - ई नकारात्मक राजनीतिपर अद्वितीय व्यंग्य थिक।

##### ४.२ राजनीतिक व्यंग्य-शृंखला:

कापडिक व्यंग्य-शृंखला 'हगना-पदना', 'धोती-गमछा', 'बगडिया-सडहतिया' - ई काल्पनिक संवाद-रूपमे लिखल गेल अछि। नेपाली राजनीति - जेन-जी आन्दोलन, मधेशी दलक पतन, बालेन शाह, उपेन्द्र यादव, केपी ओली - ऐ सभपर व्यंग्य सटीक अछि।

भाषाक बहुलता: ई नेपालक भाषाई यथार्थकै जीवन्त रूपमे प्रकट करैछ। 'रे, बुझ'बला बात ई छै जे ओकर काठमाडौंबाली कनिजा मैडम...' - ई भाषाई मिश्रण (Code-mixing) कापड़िक रचनाशैलीक महत्त्वपूर्ण लक्षण थिक।

व्यंग्य-रसक दृष्टि: भरत मुनिक हास्य-रसमे छह प्रकारक हास्य वर्णित अछि - आत्मस्थ, परस्थ, उभयस्थ, श्लील-अश्लील-सामान्य। कापड़िक राजनीतिक व्यंग्य 'परस्थ' हास्यक श्रेणीमे अबैछ - जे दोसरक मूर्खता आ दुर्बलतापर हँसैछ। ऐ हास्यक उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहि, बरु सामाजिक जागरण थिक।

#### ४.३ 'जनकपुर नगरपालिका-विमर्श':

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क दुइ पुस्तकक विमोचन कार्यक्रमपर व्यंग्य कापड़िक निर्भीक आलोचनात्मक दृष्टिक उदाहरण थिक। 'मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अपने अध्यक्ष होइतो मैथिली विकास कोषमे विमोचन किए?' - ई प्रश्न मैथिली साहित्यिक संस्थागत राजनीतिपर सोझ प्रहार थिक। ऐ रचनामे कापड़िक व्यक्तित्वक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष प्रकट होइछ - ओ संस्थागत भ्रष्टाचार आ अवसरवादितक विरुद्ध स्पष्टवादी छथि। 'अपनेके साँच बोलबाक साहस लोकमे घटि गेल अछि' (अरुण आर्यक उक्ति) - ई कापड़िपर सटीक लागू होइछ।

#### ५ आलोचना आ रंगमञ्च-चिन्तन

आलोचना-सिद्धान्त: 'कोनहुं रचनाक समीक्षा, निष्पक्ष भाव आ उदार दृष्टिए बिना व्यामोहस' कएने स्वच्छ समालोच्य होइछ' - ई वाक्य कापड़िक आलोचना-दर्शनक सूत्र थिक। मैथिली समीक्षामे ई 'निर्व्यामोह' (bias-free) दृष्टि अत्यन्त दुर्लभ थिक।

#### ७.३ 'टटकाल दर्शन' नाटक-प्रसंग:

'टटकाल दर्शन'क कथ्य-शिल्प, डा वीरेन्द्र पाण्डेक अंग्रेजी समीक्षा-प्रकाशन - ई प्रसंग कापड़िक नाट्य-लेखनक अन्तर्राष्ट्रिय स्तरपर मान्यता भेटबाक आह्लादक दृष्टान्त थिक। 'एहि नाटकके कथ्य-शिल्प आ रंगमंचीय प्रविधिक संगहि एकर प्रदर्शनीय जोगार भजार'- कापड़ि व्यावहारिक नाट्यकर्मि छथि, मात्र सैद्धान्तिक नहि।

## ६ उपसंहार

परमेश्वर कापड़िक रचना-संसार मैथिली साहित्यक एक बहुमूल्य अध्याय थिक। लोककथाक जीवन्त भाषा, पौराणिक आख्यानक दार्शनिक तत्त्व, व्यंग्यक निर्भीक कलम, आत्मकथात्मक प्रसंगक मार्मिकता, साहित्यिक समीक्षाक निष्पक्षता - ई सभ हुनकर बहुआयामी प्रतिभाक प्रमाण थिक। 'मिनाप बहुत बडका अभियान छी' - ई कापड़िक अपन उक्ति हुनकर जीवन-दर्शनक सारभूत रूपमे प्रकट करैछ। मैथिला/मिथिला अभियान - भाषा-साहित्य-संस्कृति-रंगमञ्च - ई सभ मिलिकऽ एक सम्पूर्ण मिथिला-चेतनाक निर्माण करैछ। कापड़ि ऐ चेतनाक जीवित प्रतिनिधि छथि।

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त, गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि - ऐ चारू दृष्टिसँ कापड़ि एक महत्त्वपूर्ण, बहुआयामी, साहसी आ प्रतिबद्ध मैथिली रचनाकार थिकाह जिनका विदेह समानान्तर साहित्य इतिहासमे केन्द्रीय स्थान प्राप्त होएब उचित आ आवश्यक अछि।

## अध्याय ०४

### रेड-रेड : विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

---

रंगभाषा, सामाजिक व्यंग्य आ नाट्यदृष्टि

#### १. साहित्यकार परमेश्वर कापडिक जीवन-परिचय

##### १.१ जीवन-वृत्त

परमेश्वर कापडि - नेपालक जनकपुरधामसँ सम्बद्ध एक बहुविधावादी, प्रयोगशील एवं सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबद्धतासँ ओतप्रोत मैथिली साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं मिथिला-मैथिली अभियानी छथि। ओ राराब (त्रिभुवन विश्वविद्यालय) क्याम्पस जनकपुरधामक मैथिली विभागक पूर्व विभागाध्यक्ष रहल छथि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयक केन्द्रीय मैथिली विभागक सेहो पूर्व विभागाध्यक्षक रूपमे हुनकर सेवा मैथिली भाषाशिक्षण, साहित्यिक अनुसन्धान एवं लोकसाहित्य-सञ्चयनमे अतुलनीय योगदान देलक अछि।

हुनकर व्यक्तित्वक विशेषता ई अछि जे ओ एकधारे- साहित्यकार, लोकसाहित्यक खाँटी अध्येता, मिथिला राज्य संघर्ष समितिक संयोजक, तथा मैथिली विकास कोषक पूर्व सदस्य-सचिव रहल छथि। समकालीन मैथिली साहित्यमे हुनकर स्थान प्रयोगधर्मी एवं यथार्थवादी नाटककारक रूपमे विशेष उल्लेखनीय अछि। हुनकर साहित्यिक उत्पादनमे लोककथा, नाटक, निबन्ध, आलोचनात्मक लेखन, सामाजिक टिप्पणी एवं सांस्कृतिक विमर्श सम्मिलित अछि।

##### १.२ साहित्यिक विधा एवं प्रकाशित कृति

परमेश्वर कापडिक साहित्यिक कर्म बहुविध अछि। हुनकर ज्ञात रचनामे सम्मिलित अछि:

(क) नाटक: 'रेड-रेड' - समकालीन राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य नाटक (नेपाल, जनकपुरधाम, अवन्तिका मैथिली नाट्य संस्था) (ख) लोककथा (ग) सांस्कृतिक निबन्ध (घ) सामाजिक टिप्पणी (ङ) गीत-फकड़ा।

ऐ विविधतासँ स्पष्ट होइछ जे कापडि केवल विद्वान नहि, बरु एक सृजनशील, बहुआयामी सांस्कृतिक कर्मी थिकाह। हुनकर मूल चिन्ता लोकभाषा, लोकसमाज एवं मिथिलाक सांस्कृतिक अस्मिता अछि।

## २. नाटक 'रेड-रेड' - कथावस्तु एवं रंगशिल्प

### २.१ नाटकक परिचय

'रेड-रेड' परमेश्वर कापडि द्वारा रचित मैथिली नाटक थिक जे अवन्तिका मैथिली नाट्य संस्थाक रिहर्सल स्थानपर केन्द्रित अछि। नाटकक शीर्षक 'रेड-रेड' एक ध्वन्यात्मक प्रतीक थिक - जे रङ्गमञ्चक रङ्गभेद, जीवनक रङ्गपरिवर्तन एवं सामाजिक-राजनीतिक चरित्रक बहुस्तरीय रूपांकन करैछ।

नाटकक मुख्य पात्रसब: श्रीधर (निर्देशक), अनवर, हमाल, अक्षरा, छौंड़ा, लक्ष्मी/ऐश्वर्या, विष्णु/विवेक, बम बहादुर, नूनूकाका। इएह पात्रमण्डल नाटकक सामाजिक वर्ग-संरचनाक प्रतिनिधित्व करैछ - कलाकार, श्रमिक, दैवी शक्ति, पुलिस, एवं लोकनाट्यक आत्मा।

### २.२ कथावस्तुक संक्षेप

नाटकक आरम्भ होइछ एक पुरान जमिंदारी भवनमे जतए अवन्तिका नाट्य संस्था रिहर्सल कऽ रहल अछि। श्रीधर एक कविता पढ़ैत तन्मय अछि - एक आह्वानगीत जाहिमे रङ्गमञ्चपर सक्रिय होयबाक, समाजक पुनर्निर्माणक आकांक्षा व्यक्त कयल गेल अछि।

तत्पश्चात नाटककेर मध्यमे लक्ष्मी (धन-देवी) प्रकट होइ छथि। तथापि ई प्रकटीकरण कोनो दैवी वरदान नहि, बरु एक कटु सत्यक उद्घाटन थिक - जे लक्ष्मी समाजमे वास्तवमे कतए अछि, आ भ्रष्टाचारी शासन-व्यवस्था ओकरा कोना हरण करैछ। गरीबी सभ पापक जड़ि थिक - इएह नाटकक केन्द्रीय सत्य थिक।

विष्णु (देवता) प्रकट होइछ - परन्तु ओ सेहो लक्ष्मीक सोना बाँटि नहि पवैछ। बम बहादुर (पुलिस) प्रकट होइछ आ कलाकारगणकै गिरफ्तार करैछ। अन्तमे नूनूकाका (लोकधर्मी प्रतीक) प्रकट होइछ जे लोकनाट्यक माध्यमसँ सत्यक उद्घाटन करैछ। नाटकक समाप्ति विवाह-संस्कारक दृश्यसँ होइछ - जे नवसृजनक, नवजीवनक प्रतीक थिक।

### २.३ रङ्गशिल्प एवं नाट्यतकनीक

'रेड-रेड' एपिक थिएटरक शैलीमे रचित अछि। स्वर-भङ्गिमामे परिवर्तन, तन्मय-भावसँ राजनीतिक नारा-लगावटि, नृत्य एवं गायन - इएह ब्रेख्टियन 'वर्फ्रेम्डुइस्डफेक्ट' (अपरिचयीकरण) तकनीकक निकट अछि। नाटकमे पाँच प्रमुख नाट्यतकनीक व्यवहृत अछि:

(१) स्वर-भङ्गिमा परिवर्तन (Voice Modulation as Alienation Effect)

(२) रङ्ग-तरङ्ग - दृश्य-परिवर्तनक रूपकात्मक प्रयोग

(३) एपिसोडिक संरचना - खण्डित दृश्यविधि

(४) लय-परिवर्तन - लोकगीत, हुमरी, नाराशैली

(५) मेटाथिएटर - नाटकक भीतर नाटकक आत्म-सन्दर्भिता।

### ३. चतुर्धा विश्लेषण-पद्धति

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास दृष्टिक अनुसार, समीक्षाक चार स्तम्भ अछि: (अ) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, (आ) पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त, (इ) नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय), (ई) विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि।

### ३.१. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र

#### ३.१.१ रसविचार - नाटकमे प्रभावी रस

भरत मुनिक नाट्यशास्त्र (नाटकमे नवरस) एवं अभिनवगुप्तक अभिनवभारती (रसास्वादन-सिद्धान्त)क प्रकाशमे 'रेड-रेड'क रसिक विश्लेषण निम्नलिखित रूपमे होइछ:

मुख्य रस: करुण

गरीबीक त्रासदी, बेरोजगार कलाकारक यातना, लक्ष्मी (धनदेवी)क खाली हाथ जेबाक दृश्य - इएह समग्र नाटकमे करुण रसक स्थायी भावका आधार थिक। 'गरीबी रोग' - यएह रुदनोक्ति समग्र नाटककै करुणाक आद्र वातावरणमे राखैछ।

व्यंग्य-रस (हास्य + रौद्र): द्वैत रसानुभव

भरतक हास्यरस एवं रौद्र रसक बीच नाटककार एक अजगुत तनाव स्थापित करैछ। बम बहादुर प्रहरीक प्रवेश, लक्ष्मीक प्रस्थान - इएह दृश्यमे हास्य आ रौद्रक सम्मिश्रण अछि। अभिनवगुप्तक 'रसाभास' सिद्धान्तक अनुसार, एतऽ रसक पूर्ण उद्रेक नहि, बरु एक अपूर्ण, विक्षुब्ध अनुभव होइछ - से स्थिति 'रेड-रेड'मे बेर-बेर आवैछ।

वीर रस: अन्तिम प्रतिरोध

जेल-दृश्यमे अनवर आ विवेक केर निर्भय प्रतिरोध, लोकनाट्यक माध्यमसँ सत्य-उद्घाटनक दृश्य - इएह वीर रसक अभिव्यक्ति थिक। 'ॐ खम्ब्रह्मन् - सुग ऋतस्य पन्था' - यएह उद्घोष वीर रसक चरमोत्कर्ष थिक।

#### ३.१.२ ध्वनि-सिद्धान्त - आनन्दवर्धनक परिप्रेक्ष्यमे

आनन्दवर्धनक 'ध्वन्यालोक' (८५० ई.) अनुसार, उत्तम काव्यमे 'ध्वनि' - अर्थात् वाच्यार्थसँ परे व्यङ्ग्यार्थक स्तर - मुख्य होइछ। 'रेड-रेड'मे ध्वनिक तीन स्तर स्पष्ट अछि:

प्रथम ध्वनि-स्तर: शाब्दिक - 'रेड-रेड' रङ्गकेर ध्वनि थिक। द्वितीय ध्वनि: रूपकात्मक - जीवनक रङ्गपरिवर्तनक संकेत। तृतीय ध्वनि: राजनीतिक - भ्रष्टाचारी शासनमे लोकसंस्कृतिक विखण्डन।

नाटकक शीर्षक 'रेड-रेड' स्वयं एक बहु-ध्वन्यात्मक संकेत थिक - जाहिमे रङ्ग (colour/stage), रोग (disease as poverty), रण (struggle) तथा रेड (the sound of a suppressed cry) सब एक संग अनुगुञ्जित होइछ।

३.१.३ वक्रोक्ति - कुन्तकक परिप्रेक्ष्यमे

कुन्तकक 'वक्रोक्तिजीवित'क (१०म शती) अनुसार, उत्कृष्ट काव्य-नाटकमे 'वक्रोक्ति' - सरल अभिधेयसँ भिन्न, विचलित, वक्र अभिव्यक्ति - मूल थिक। 'रेड-रेड'मे वक्रोक्तिक कएटा उदाहरण अछि:

(क) देवता विष्णुक प्रवेश - दैवी नहि, बरु व्यंग्यात्मक: ओ मात्र 'दू-टप्पी' बात करैछ आ चलि जाइछ।

(ख) लक्ष्मी (धन-देवी) खाली हाथ जाइछ- यएह सर्वाधिक वक्र कथन थिक।

(ग) सत्यनारायण पूजाक पाठ - गरीबीमे व्यंग्यात्मक धार्मिक अनुष्ठान।

(घ) सोनाक असरफी- स्वर्णस्वप्न जे खाक होइछ - यएह वक्र प्रतीकतन्त्र थिक।

३.२. पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त

३.२.१ ब्रेख्टियन एपिक थिएटर (Brechtian Epic Theatre)

बर्टोल्ट ब्रेख्ट (१८९८-१९५६) क एपिक थिएटर सिद्धान्त 'रेड-रेड'क निकटतम पाश्चात्य समकक्ष थिक। ब्रेख्टियन 'Verfremdungseffekt' (अपरिचयीकरण प्रभाव) एहि नाटकमे निम्न रूपमे अभिव्यक्त होइए:

(अ) दर्शककें भावनात्मक तादात्म्यसँ दूर राखि तर्क-चिन्तनमे प्रवृत्त करबाक उपाय - स्वर-भङ्गिमा परिवर्तन, नाटकक भीतर गान-नृत्य - इएह ब्रेख्टियन 'Gestus' थिक। (आ) 'गरीबी रोग'क नारा-स्वरूप दोहरायब - ब्रेख्टियन 'Song' तकनीक। (इ) जेलक दृश्यमे 'मोबाइल'पर अनवर-अक्षराक लटपटाइ - दर्शककें वास्तविकतासँ जोड़ैछ।

### ३.२.२ मार्क्सवादी नाट्य-आलोचना

रेमण्ड विलियम्स ('Drama from Ibsen to Brecht', 1952) एवं टेरी ईगलटन ('Marxism and Literary Criticism', 1976) क प्रकाशमे 'रेड-रेड'क वर्ग-संघर्ष विश्लेषण:

नाटकमे शासक-वर्ग (प्रहरी, सरकार, विष्णु/यथास्थितिवादी देवत्व), कला-वर्ग (श्रीधर, अनवर, हमाल, अक्षरा - बेरोजगार कलाकार), तथा लोकवर्ग (नूनूकाका, छौंडा) - इएह त्रिभुजीय संघर्ष मार्क्सवादी वर्गसंघर्षक नाट्य रूपान्तरण थिक। सोना (पूँजी)क संचय, वितरण आ अन्ततः निराशाजनक अन्तर्धान - यएह पूँजीवादी संचय-तन्त्रक रूपक थिक।

### ३.२.३ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि (Postcolonial Theory)

होमी भाभा ('The Location of Culture', 1994) एवं गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक ('Can the Subaltern Speak?', 1988) क प्रकाशमे:

'रेड-रेड'क भाषा-विमर्श (मैथिली बनाम नेपाली/हिन्दी/अंग्रेजी/संस्कृत/उर्दू - विष्णुक असरफीपर कोन भाषामे लिखबाक विवाद) एक उत्कृष्ट उत्तर-औपनिवेशिक 'हाइब्रिडिटी' (संकरता) दृश्य थिक। नाटककार भाभाक 'Third Space'- तृतीय आकाश - निर्मित करैछ जतए कोनो एक भाषा/संस्कृति प्रभुत्वशाली नहि। नूनूकाकाक प्रवेश - लोकनाट्यक आत्मा - भरत मुनिक 'पञ्चमवेद' तर्कक माध्यमसँ उपनिवेशी (ब्राह्मणी-संस्कृत) वर्चस्वकें चुनौती दैछ।

### ३.२.४ नारीवादी आलोचना (Feminist Theory)

जूडिथ बटलर ('Gender Trouble', 1990) एवं सिमोन द बोउव्वार ('The Second Sex', 1949) क आलोकमे अक्षरा-चरित्रक विश्लेषण:

अक्षरा एकमात्र महिला-पात्र थिक जे नाटकमे मुखर एवं साहसी अछि। ओ हमाल (नायक) कें प्रेमविवाहक प्रस्ताव करैछ, पुलिससँ निर्भय वार्तालाप करैछ। तथापि, लक्ष्मी-दृश्यमे महिलाक आर्थिक शक्ति (धनदेवी) एवं पुरुषवादी आर्थिक सत्ताकेर बीच एक तनावपूर्ण 'परफॉर्मेटिविटी' (बटलर) स्पष्ट होइछ।

### ३.२.५ चीनी साहित्यिक सिद्धान्त (Chinese Literary Theory)

चीनी 'जिङ जिङ' (Aesthetic Realm/Realm of Experience) सिद्धान्त - वाङ गुओवेइ ('Renjian Cihua', 1908-1910) एवं 'फेंग' (Satire in traditional Chinese theatre) परम्पराक प्रकाशमे:

'रेड-रेड'क राजनीतिक व्यंग्य चीनी 'जाजू' (Yuan Dynasty Musical Drama) एवं 'कुंकू' (Kunqu Opera) परम्पराक व्यंग्यात्मक तत्त्वसँ तुलनीय अछि- जतए शासक-वर्गक मूर्खतापर व्यंग्यात्मक हास्य, कथा-भीतर-कथाक संरचना, एवं लोक-सुर (Folk Tunes) क काव्यात्मक प्रयोग केन्द्रमे रहैछ। गरीबी-बोध (Pínkùn yìshí) एवं सामाजिक न्यायक आकांक्षा - इएह दुनु परम्पराक साझा केन्द्रबिन्दु थिक।

### ३.३.नव्य-न्याय - गंगेश उपाध्यायक ज्ञानमीमांसा

#### ३.३.१ प्रत्यक्ष-ज्ञान (Direct Perception) एवं नाट्य-सत्य

गंगेश उपाध्याय (मिथिला, १३म शती)क 'तत्त्वचिन्तामणि' (प्रत्यक्ष-खण्ड)क 'प्रत्यक्ष' (प्रत्यक्ष ज्ञान)क सिद्धान्तक आलोकमे 'रेड-रेड'क ज्ञानमीमांसा:

नाटकमे गरीबीक प्रत्यक्ष अनुभव- 'भूखसँ मरल छी' (अनवर) - एक 'निर्विकल्पक प्रत्यक्ष' (Indeterminate Perception) थिक। लक्ष्मीक प्रत्यक्षीकरण - सोनाक बरसनाइ - एक 'सविकल्पक प्रत्यक्ष' (Determinate Perception) थिक जे अन्ततः मिथ्या सिद्ध होइछ। यएह गंगेशक 'प्रत्यक्ष-भ्रम' (Perceptual Illusion) तन्त्रक नाट्य अभिव्यक्ति थिक।

#### ३.३.२ अनुमान-तन्त्र (Inference) एवं नाटकक तर्कशृंखला

गंगेशक 'व्याप्तिग्रह' (Invariable Concomitance) - जे व्याप्तिक आधारपर अनुमान सम्भव होइछ - 'रेड-रेड'क केन्द्रीय तर्कक आधार थिक:

व्याप्ति: 'गरीबी रहतइ तँ सब रोग रहतइ।' (Poverty persists → All misery persists) - यएह नाटकक 'हेतु' (Logical Reason) थिक। साध्य: 'सब रोगक

कारण गरीबी।' (All disease's cause is poverty) - यएह नाटकक 'पक्ष' (Subject of Inference) थिक।

नव्य-न्यायक 'परामर्श' (Subsumptive Reflection) तकनीकसँ नाटककार श्रीधरम् क भाषणकेँ एक दार्शनिक-तार्किक घोषणाक रूपमे प्रस्तुत करैछ।

### ३.३.३ शब्द-प्रमाण एवं भाषा-विवाद

नाटकक एक महत्वपूर्ण दृश्य - सोनाक असफरीपर भाषाक प्रश्न (मैथिली? नेपाली? हिन्दी? अंग्रेजी? संस्कृत? उर्दू?) - गंगेशक 'शब्द-प्रमाण' (Testimonial Knowledge) सिद्धान्तक नाट्य परीक्षण थिक। गंगेशक अनुसार, 'शब्द-प्रमाण' तखने वैध थिक जखन वक्ता आप्त (प्रामाणिक) हुअय। नाटकमे भाषा-वर्चस्वक प्रश्न इएह जिज्ञासा उठाबैछ: कोन भाषाक शब्द 'आप्त' (Authoritative) थिक? के वक्ता 'आप्त' थिक?

### ३.४. विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि

#### ३.४.१ प्रति-कैनन (Counter-Canon) एवं परमेश्वर कापडि

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास आन्दोलनक मूल तर्क थिक जे साहित्य अकादेमी (नई दिल्ली) एवं नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठान-केन्द्रित 'मुख्यधारा' मैथिली साहित्यक इतिहासमे बहुत किछु 'छोड़ि देल' गेल - विशेषत: नेपालक मैथिली साहित्यकार, सीमान्त लेखक, एवं लोकनाट्य-परम्परा।

परमेश्वर कापडि एहि 'छोड़ल गेल' समूहक प्रतिनिधि थिका। हुनकर 'रेड-रेड'

-

(क) नेपालक जनकपुरधाम-केन्द्रित मैथिली रङ्गमञ्चक प्रतिनिधित्व करैछ

(ख) साहित्य अकादेमीक संस्थागत वर्चस्वकेँ प्रत्यक्षत: व्यंग्य-विषय बनाबैछ

(ग) लोकनाट्य (नूनूकाका-प्रसंग) केँ शास्त्रीय नाट्यक समकक्ष स्थापित करैछ

(घ) बेरोजगार कलाकारक संघर्षकेँ केन्द्रमे राखैछ - जे मुख्यधारा साहित्यिक इतिहासमे अनुपस्थित अछि

### ३.४.२ मैथिली रङ्गमञ्चक समानान्तर इतिहासमे 'रेड-रेड'

मैथिली नाट्य-इतिहासमे 'रेड-रेड' एक विशिष्ट स्थान रखैछ। अयोध्यानाथ चौधरी (यशस्वी मैथिली साहित्यकार)क प्रतिक्रिया सँ स्पष्ट होइछ, जे ई नाटक अपन युग-सत्य, लोकयथार्थ एवं जेन-जी आन्दोलन ('जेन-जी' - युवा पीढ़ीक विद्रोही आन्दोलन) सँ प्रेरित राजनीतिक परिवेशक सटीकतासँ रेखांकित करैछ।

### ४. तुलनात्मक अध्ययन - मैथिली नाटककार/साहित्यकारसँ

जतए मूलधारा ऐतिहासिकता एवं सांस्कृतिक पुनरुद्धारमे निमग्न अछि, ततए कापडि समकालीन राजनीतिक यथार्थपर केन्द्रित छथि। नाट्यतकनीकमे मूलधारा शास्त्रीय त्रि-ऐक्य (स्थान, काल, क्रिया) केर अधिक पालन करैछ, मुदा 'रेड-रेड' एपिक थिएटरक खुजल संरचना अपनाबैछ।

#### महेन्द्र मलंगियासँ तुलना

महेन्द्र मलंगिया लोकनाट्यक सौन्दर्यशास्त्रीय धरातलपर मात्र उठा सकला, ततए कापडि ओकरा राजनीतिक प्रतिरोधक अस्त्रमे बदलि देलथि। दुनु नाटककार मैथिली साहित्यमे व्यंग्यक प्राथमिक साहित्यिक उपकरणक रूपमे व्यवहार करै छथि। मलंगिया सीमित रूपमे, मुदा कापडि मुक्त नाट्यरूपमे। दुनूक केन्द्रीय चिन्ता फराक अछि, मलंगिया एकटा सीमित वर्गक समस्या लेल मुदा कापडि बेचन ठाकुर सन बेरोजगारी, भ्रष्टाचारी व्यवस्थाक विरुद्ध एवं मैथिली अस्मिता लेल लिखै छथि।

नाटकक पात्र 'श्रीधरम्' (निर्देशक) सम्भवतः एक व्यंग्यात्मक संकेत थिक - नेपालक मैथिली संस्थागत साहित्यिक व्यवस्थापर।

ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम आ विद्यापतिक (ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न) 'गोरक्षविजय' क नाट्य-परम्परामे नूतनकाका-प्रसंगमे अनुगुञ्जित होइछ। 'भरत मुनिक नाट्यशास्त्र' एवं नाटकमे 'पञ्चमवेद' तर्क - अही परम्परासँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध अछि। कापडि ऐ परम्पराक समकालीन राजनीतिक सन्दर्भमे पुनर्स्थापित करै छथि।

## ५. समीक्षात्मक मूल्यांकन - शक्ति एवं सीमा

### ५.१ नाटकक विशिष्ट शक्ति

(क) लोकनाट्य-परम्परा एवं आधुनिक राजनीतिक थिएटरक सफल सम्मिश्रण।

'रेड-रेड'क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यएह थिक जे ओ मैथिली लोकनाट्यक फकडाकै समकालीन राजनीतिक थिएटरक अस्त्रमे बदलै छथि। ई ब्रेस्टक एपिक थिएटरसँ सेहो आगू जाइत अछि- किएकि एतए सौन्दर्यशास्त्रक जड़ि स्थानीय, लोकपरम्परामे अछि।

(ख) भाषा-बहुलता एवं सांस्कृतिक संवाद।

नाटकमे मैथिली, नेपाली, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी - इएह बहुभाषिक समांगता स्वयं एक सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य थिक। नेपालक मैथिली अस्मिता - जे बहुभाषिक प्रदेशमे रहैछ - तकर यथार्थ अनुभव नाटकमे सजीव थिक।

(ग) मेटाथिएटर - नाटकक भीतर नाटक।

'रेड-रेड' स्वयं एक मेटाथिएटर थिक - यएह एक नाट्यसंस्थाक नाट्यरिहर्सलक कथा थिक जे स्वयं एक सामाजिक नाटकमे परिणत होइछ। ई नाटकक भीतर नाटक संरचना (Play-within-a-Play) मैथिली नाटकमे दुर्लभ अछि।

(घ) ऐश्वर्या/लक्ष्मी-दृश्य - अर्थशास्त्रक रूपक।

लक्ष्मीक सोना-वर्षण, लोभग्रस्त पात्रगणद्वारा ओकर हरण, एवं अन्ततः शून्यहस्त विदाई - यएह पूँजीवादी अर्थव्यवस्थाक एक उत्कृष्ट रूपकात्मक चित्रण थिक जे मार्क्सवादी आलोचनाक सभ अपेक्षा पूरा करैछ।

### ५.२ नाटकक सीमा एवं आलोचना-बिन्दु

(क) अन्तिम विवाह-दृश्य - हमाल-अक्षराक विवाह - नाटकक राजनीतिक तेवरसँ किछु असंगत प्रतीत होइछ। यएह परिणति वाणिज्यिक रङ्गमञ्चीय समझौताक लक्षण थिक।

(ख) नूनूकाकाक 'पञ्चमवेद' तर्क - जे नाटकक दार्शनिक उत्कर्ष थिक - ओकरा अधिक विस्तार देल जा सकैत छल ।

(ग) पात्रमे मनोवैज्ञानिक गहराई असमान अछि- श्रीधरम् एवं अनवर सुविकसित, मुदा छौंड़ा एवं बम बहादुर कतहुँ-कतहुँ अतिसरलीकृत रूढ़ि (stereotype) मे बदलि जाइछ ।

## ६. नाटककार एवं नाटकक साहित्यिक महत्त्व

### ६.१ मैथिली रङ्गमञ्चमे योगदान

'रेड-रेड' नेपालक मैथिली रङ्गमञ्चकेँ एक नव आयाम दैछ । ओ प्रमाणित करैछ जे -

(क) मैथिली नाटक विश्वस्तरीय राजनीतिक थिएटरक प्रसंगमे रखल जा सकैछ

(ख) लोकनाट्य-परम्परा 'आदिम' नहि, बरु 'आधुनिकतम' विचार-माध्यम थिक

(ग) बेरोजगार, सीमान्त मैथिली कलाकारक संघर्ष साहित्यिक विषयक रूपमे गम्भीर अछि

(घ) जनकपुरधाम - नेपालक मैथिली रङ्गमञ्चक केन्द्र - दरभंगा केन्द्रित इतिहाससँ स्वतन्त्र अपन परम्परा रखैछ

### ६.२ विदेह समानान्तर इतिहासमे स्थान

विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक दृष्टिमे, परमेश्वर कापडि - एहन रचनाकार छथि जे-

(अ) संस्थागत तन्त्रसँ बाहर रहिकऽ, अपन साहित्यिक कर्म जारी रखै छथि ।

(आ) लोकसाहित्य-परम्पराकेँ आधुनिक राजनीतिक थिएटरसँ जोड़ै छथि । (इ)

नेपालक मैथिली अस्मिता-संघर्षकेँ साहित्यिक अभिव्यक्ति दै छथि । (ई)

मिथिलाक सांस्कृतिक वैभवकेँ आधुनिक चिन्तनसँ समन्वित करै छथि ।

यएह सभ विशेषता 'मुख्यधारा इतिहाससँ वञ्चित रचना' - विदेह समानान्तर इतिहासक उपशीर्षक - केँ चरितार्थ करैछ।

### ७. उपसंहार

परमेश्वर कापड़िक 'रेड-रेड' मैथिली साहित्यमे एहन नाटक थिक जे जीवनकेँ देखबैत अछि, जेना रङ्गमञ्चपर। गरीबी, भ्रष्टाचार, कलाकारक बेरोजगारी - ई सभ रोग थिक। तथापि नाटककार निराशावादी नहि छथि- लोकनाट्यक माध्यमसँ, पञ्चमवेदक शक्तिसँ, नवविवाहक प्रतीकसँ- ओ एकटा दुर्दमनीय आशावादिताक संदेश देबऽ चाहै छथि।

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य एपिक थिएटर, चीनी व्यंग्य-नाट्य-परम्परा, गंगेशक नव्य-न्यायिक ज्ञानमीमांसा - ऐ चारू परम्पराक प्रकाशमे 'रेड-रेड' एक बहुस्तरीय, समृद्ध रचना थिक जे मैथिली नाट्य-परम्पराकेँ एक नव आयाम प्रदान करैत अछि।

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहासक दृष्टिमे, कापड़ि - मुख्यधारा साहित्यिक इतिहासद्वारा 'कतिआयल' एक महत्त्वपूर्ण नाटककार छथि- जिनकर 'रेड-रेड' मैथिली रङ्गमञ्चक इतिहासमे अपन अविस्मरणीय स्थान रखैत अछि।

## अध्याय ०५

### गहन उगरास : बहुआयामी नाट्यशास्त्रीय समीक्षा

समाज, संघर्ष आ रंगमञ्चक बहुस्तरीय विश्लेषण

'गहन उगरास'क ऐतिहासिक आ प्रकाशनक पृष्ठभूमि

समकालीन मैथिली नाट्य-परम्परा आ रंगमंचीय प्रयोगशीलताक क्षेत्रमे परमेश्वर कापडिक नाटक 'गहन उगरास' एकटा ऐतिहासिक आ मीलक पत्थर थिक। प्रस्तुत नाट्य-कृतिक प्रथम संस्करणक प्रकाशन फागुन २०७३ मे पृथु प्रकाशन, जनकपुरधाम सँ भेल। एकटा विशुद्ध आ मौलिक नाट्य-कृतिक रूपमे लिखल गेल एहि पुस्तकक आवरण चित्र सुप्रसिद्ध मिथिला चित्रकार एस. सी. सुमन द्वारा आ सेटिङ तथा डिजाइन कुमार भास्कर द्वारा कयल गेल। परमेश्वर कापडि अपन एहि विशिष्ट नाटक केँ मैथिलीक सुप्रसिद्ध आ ऐतिहासिक रंगकर्मी कुणालजी केँ समर्पित कयलनि अछि, जिनकर रंगमंचीय सक्रियता आ नाट्य रचनाशीलता पर मैथिली भाषा आ साहित्य केँ अनन्त गौरव अछि।

नेपाली रंगमंचक मूर्धन्य विद्वान डा. अभि सुवेदी एहि नाटकक संरचना केँ "प्रयोगशील" घोषित करैत लिखने छथि जे नाटककार कापडि पारम्परिक दृश्य-विधान वा कृत्रिम सेनोग्राफी (scenography) क स्थान पर मानवीय संवाद आ संवादक आन्तरिक सम्बन्ध सँ रंगमंचक निर्माण कयलनि अछि। नाटकक मुख्य पात्र जिम्दार अछि आ ओकर चारू कात सामाजिक सम्बन्धक बनब आ भथब चलैत रहैत अछि। नाटककार परमेश्वर कापडि व्यवस्था सँ दुइस लैले जानल जाइत छथि। ओ स्वयंमे मैथिलीक एकटा जीवन्त शब्दकोश छथि, जकर प्रकर प्रमाण 'गहन उगरास'क खाँटी आ समृद्ध मैथिली शब्दावलीमे देखल जा सकैछ।

ऐतिहासिक रूप सँ, नेपालक सीमामे अवस्थित मिथिलांचलक रंगमंचीय आ सांस्कृतिक राजधानी जनकपुरधाम थिक। जकर आभाक मूल शक्ति वर्ष १९७९ मे स्थापित 'मिथिला नाट्यकला परिषद' (मिनाप) रह्य, जकर उष्मा सँ मैथिली नाट्य चेतना जाग्रत रहैत छल। मुदा बीसम शताब्दीक अन्त होइत-होइत

धीरेन्द्र-धूमकेतुजीक असामयिक निधनसँ जनकपुरक रंगमंच कने सेराए लागल। ताही समय भारतक पटनाक रंगमंच सेहो निष्क्रियताक शिकार भऽ गेल, गाउँ-घरक पारम्परिक मंच पर अश्लील अर्किस्ट्राक कब्जा भऽ गेल, आ विद्यापति पर्वक नाम पर चन्दा-चिट्ठाक व्यापार करैबला लोक पागक स्थान पर योग्य लोक केँ दाग दै लागल। महेन्द्र मलंगियाक 'स्लैपस्टिक ह्यूमर' सर्वहारापर उपहास करैत रहल। एहेन भीषण अन्हारमे जनकपुरमे 'मिनाप', 'आकृति', 'अच्छिजल' आ 'भंगिमा' सन संस्था सभक प्रयास सँ मैथिली नाटकक पुनरुत्थान भेल। ठीक ताही समय नेपालक १० वर्षक माओवादी जनयुद्ध आ दोसर जनआन्दोलनक विभीषिका सँ उपजल यथार्थ सँ प्रेरित भऽ कऽ रमेश रंजन 'सखी' नाटकक संग अएलाह आ परमेश्वर कापडि 'गहन उग्रास'क संग।

नाटकक कथ्य संरचना, प्रतीक योजना आ सामाजिक-राजनैतिक यथार्थ

'गहन उग्रास'क कथानक मुख्य रूप सँ दू भागमे विभक्त अछि, जे नेपालक सामन्ती संक्रमणकाल, जनयुद्धक सामाजिक प्रभाव आ सांस्कृतिक औपनिवेशीकरणक ऐतिहासिक विमर्श केँ रूपकात्मक ढंग सँ प्रस्तुत करैत अछि। नाटकक आरम्भिक कालखण्ड नेपालक दोसर जनआन्दोलन (विक्रम संवत् २०६२-६३) क बादक प्रतिगमन कालक राजनैतिक संकट थिक। राजशाही आ निरंकुश पंचायती व्यवस्थाक दमन शिथिल भऽ रहल अछि, मुदा ज्ञानेन्द्रक सरकार बल-जबरदस्ती सत्ता केँ अपन वशमे रखबाक अन्तिम चेष्टा कऽ रहल अछि, जखन कि दोसर दिस संविधान सभाक माध्यम सँ संघीय गणतन्त्रक लेल नव आन्दोलनक लहरि देशमे पसरल अछि।

प्रथम भागक सूक्ष्म कथ्य विश्लेषण

नाटकक प्रथम भागक आरम्भ सामन्ती अवशेषक प्रतीक राजपूत जिमदार फुलगेन सिंहक ढहल-ढनमनाएल घर सँ होइत अछि, जकर एको टा बखारीमे अन्नक दाना नहि अछि। जिमदारक बाल-बच्चा सभ बाहरे रहैत अछि आ गामक धानुक (मनेजरा) ओकर सेवा-टहल आ भन्सा-भात करैत अछि। खौझाह बूढबा जिमदार फुलगेन सिंह ठेहुना-पिट्टीमे गमछा लपेटने माछी मारैत अपन पुरान सामन्ती धाक केँ स्मरण करैत अछि। गामक ढीठ आ पिडल धियापूता (टुनमा आ मुसना) जिमदारक ओसारी पर "हाथी अगत्त, घोडा अगत्त, अइ

बाबा बियाहमे पोता चलत" आ "रेड-रेड-रेड, तोरा पतलीमे बेड" जकाँ पारम्परिक लोक-गीत गाबि कऽ ओकर उपहास करैत अछि। दू टा छौड़ी जट-जटिन खेलैत जिमदार केँ "गामके अधिकारी ई जिमदरबा छै, गे ना, कनही तराजू घटबी सेर छै, गे ना" कहि कऽ ओकर शोषक चरित्र केँ नंगा करैत अछि।

एहि बीच सती नामक एकटा मध्य-वयस्क महिलाक प्रवेश होइत अछि, जे जिमदार केँ गारी-गलौज करवा सँ रोकैत अछि आ चेतबैत अछि जे आब सामन्ती दमनक युग समाप्त भऽ गेल अछि आ "लात जुत्ता" लागब निश्चित छैक। तखनिए रंगमंच पर पाँच टा क्रान्तिकारी युवा लोकनिक प्रवेश होइत अछि:

फुलो खतबे: एकटा जुझारू दलित मानवाधिकार कार्यकर्ता।

दुखिया सादा: एम्नेस्टी इन्टरनेशनलक प्रतिनिधिक रूपमे शोषितक आवाज।

सुभद्र मंडल: एकटा सक्रिय राजनैतिक कर्मी।

ज्वाला प्रसाद सिंह (ज्वाला): माओवादी जनयुद्धक भूमिगत लड़ाकू, जे शोषकक अन्त लेल हथियार उठाने अछि।

विद्यापति यादव: प्रखर पत्रकार आ संचारकर्मी, जे कलम बले शोषक वर्ग केँ नाडट करैत अछि।

जिमदार जखन अपन पुरान सामन्ती शोषणक घमण्ड देखाबैत कहैत अछि जे "बाप-दादा हवेलीमे गाइ चराबैत रहे आ कनियाँ सभ हवेलीक दासी बनैत छलीह", तखन क्रुद्ध भऽ कऽ माओवादी लड़ाकू ज्वाला सिंह ओकरा एक झाप (एड) मारैत अछि, जाहिसँ बूढ़ जिमदार थुरथुर काँपैत भूईँ पर खसि पड़ैत अछि। सभ युवा प्रतिगमनक विरुद्ध भऽ रहल पैघ राजनैतिक सभामे रिपोर्टिङ आ सहभागिताक लेल चलि जाइत छथि। कनी कालक बाद सेवक दौड़ैत अबैछ आ बुढ़वा खोखना आ बुढ़िया केँ रोइत-कनैत जानकारी दैत अछि जे स्कूलक राजनैतिक सभामे पुलिस अन्धाधुन्ध गोलीबारी कयलक, जाहिमे सतीक छातीमे दू टा गोली लागल आ ओ मरी गेलीह, ज्वाला सिंहक तत्क्षण मृत्यु भऽ गेलै, फुलो अन्तिम साँस लेइत अछि, आ सुभद्र तथा विद्यापतिक स्थिति अत्यन्त गम्भीर अछि।

द्वितीय भागक रूपकात्मक आ सांस्कृतिक विमर्श

नाटकक द्वितीय भाग एकटा अतिथार्थवादी (Surreal) आ रूपकात्मक यात्राक रूपमे आरम्भ होइत अछि। बाबा अभेलबा आ ओकर लकवा-ग्रस्त बकलेलबा चेला (जे धान कुटैत सन थरथराइत चलैत अछि) हाथमे तुमरी-कमण्डल आ कम्मल लेने जनकपुरधामक दिश "लटक सटक सियारामा" भजन गाबैत जा रहल छथि। चेला अपन माथक मोटरी खसबाक बादो जोगिरा गाबैत अछि। जनकपुरधाम पहुँचि कऽ ओतय सूत'क लेल जमा भेल लोक सभ (लखना, बेचना, मंगला, जनका) जुटि जाइत छथि। जनका मल्लाह विवाह पंचमीक प्रसंगमे राम-सीताक बिआहक आख्यान सुनाबैत छथि। ओ कहैत छथि जे विवाहक बाद दशरथ दहेजक लेल हठ कऽ लेलक, तखन जनक अपन मूडी दशरथक आगूमे राखि देलनि। ई आख्यान मिथिलाक अनन्त सांस्कृतिक शोषणक रूपक थिक।

एहि बीच गेनमा आ फगुनी केँ धरतीक रोदन सुनाइ दैत छै। सभ गोटे धरती खनैत छथि तऽ ओतय डगडग लाल खूनक धारा भेटैत अछि। विद्यापति स्पष्ट करैत छथि जे ई खून गोरखा राजा शाहवंश द्वारा २३०-२४० वर्ष पूर्व कयल गेल दमनक अछि। माटिक भीतर मैथिली भाषा, संस्कृति आ कलाक अवशेष भेटैत अछि, जे "एक भाषा एक भेष"क दमनकारी नीति सँ नष्ट कयल गेल रह्य। बुलन्ती आ दुखियाक आह्वान पर महिला लोकनि पुनर्जीवनक गीत (छठि गीत, चैतावर, जट-जटिन) गाबैत छथि। अन्तमे विद्यापति मैथिलीक "गहन उगरास" (ग्रहण मुक्ति) आ नव संघीय नेपालमे स्वायत्त मिथिला प्रदेशक स्थापनाक लेल महाक्रान्तिक जुलुश निकालैत छथि।

## १. पोथीक सामान्य परिचय आ संरचना

परमेश्वर कापडिक मैथिली नाटक गहन उगरास (अर्थात् 'ग्रहण उग्रास'क अपभ्रंश) गहन समाजिक पीडाक उद्गार अछि जे २०७३ फागुनमे पृथु प्रकाशन, जनकपुरधामसँ प्रकाशित भेल। ई नाटक दू भागमे बँटल अछि - प्रथम भाग आ द्वितीय भाग - जाहिमे नेपालक मिथिला क्षेत्रक सामाजिक-राजनैतिक परिस्थितिकेँ केन्द्रमे राखि नाट्य-कथानक विकसित कयल गेल अछि। पात्र-योजनाक विचारसँ नाटकमे अनेक वर्गीय प्रतिनिधि उपस्थित छथि - जिम्दार

फुलगेन सिंह (शोषक सामन्त), दुनमा-मुसना (हास्यकर बालक पात्र), छौड़ी-१ आ छौड़ी-२ (विद्रोही स्त्री-स्वर), फेकुआ (युवा पात्र), हिरोइन (नव-सांस्कृतिक विकृतिक प्रतीक), बुलन्ती, सुवंश, सुभद्रा, ज्वाला, दुखिया, फूलो, सती (सर्वहारा जनसमूह), बुढबा-बुढिया (वृद्ध दम्पती), विद्यापति (सांस्कृतिक चेतनाक प्रतीक-पात्र), जनका, बेचना, लखना (मिथिलाक सामाजिक जीवनक विभिन्न वर्ग), आ फोनबला (आधुनिक संचार-माध्यमक प्रतीक)। पात्र-सूचीक विविधता स्वयं सिद्ध करैत अछि जे नाटककार समाजक कोनो वर्गकें दृश्यसँ बाहर नहि राखल चाहलनि।

## २. भारतीय नाट्यशास्त्रक दृष्टिँ

भारतीय नाट्य सिद्धान्त आ 'थिएटर ऑफ द रूट्स'क परिप्रेक्ष्यमे तुलना

भारतीय नाट्यशास्त्रक रस सिद्धान्त (विशेषतः करुण, वीर आ रौद्र रस) गहन उग्रासमे पूर्णतः अनुप्राणित अछि। सुरेश अवस्थीक 'थिएटर ऑफ द रूट्स' (जड़ि सँ जुड़ावक रंगमंच) आन्दोलनक सिद्धान्त औपनिवेशिक पाश्चात्य यथार्थवादी रंगमंचक विरुद्ध देसज लोक-विधाक पुनर्जीवनक आन्दोलन थिक। हबीब तनवीर, रतन थियम, बी. वी. कारंत आ के. एन. पणिकर लोक-अनुष्ठान आ देसज परम्परा कें आधुनिक राजनैतिक चेतना सँ जोड़ने छलाह।

मैथिली नाट्य आन्दोलनमे परमेश्वर कापड़ि 'गहन उग्रास'मे एहि रूट्स आन्दोलनक दर्शन कें नवीन रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिली रंगमंचमे पारम्परिक 'नाच' (यथा जट-जटिन, झिझिया, लोकगीत) कें केवल मनोरंजनक साधन मानल जाइत रहय, जकर कोनो लिखित आलेख नै होइत रहय। मुदा रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' आ परमेश्वर कापड़ि एहि लोक-नाच कें वर्ग-संघर्ष आ औपनिवेशिक दमनक विरुद्ध एकटा प्रखर राजनैतिक हथियार बना देलनि। नाटकक द्वितीय भागमे जखन जट-जटिनक गीत बजैत अछि, त' ओकर संवाद प्रवासी जीवनक दारुण यथार्थ कें अभिव्यक्त करैत अछि। ई लोक परम्परा कें जीवन्त आ गतिशील बनबायब थिक, जे 'थिएटर ऑफ द रूट्स'क मूल मान्यता अछि।

### (क) पञ्चसन्धि आ वस्तु-संरचना

भरतमुनिक नाट्यशास्त्रमे वस्तुकेँ मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श आ निर्वहण - एहि पाँच सन्धिमे विभाजित कयल गेल अछि। गहन उग्रासकेँ एहि साँचामे देखी तँ मुखसन्धि नाटकक आरम्भिक दृश्यमे प्रस्तुत होइत अछि जखन जिमदारक आँगनमे धान-भण्डार रिक्त अछि आ बालक टुनमा-मुसना खेल करैत जिमदारपर व्यंग्यात्मक गीत गाबैत अछि। प्रतिमुखसन्धि तखन उभरैत अछि जखन जनआन्दोलनक लहरि आबि जिमदारक सत्ता-व्यवस्थाकेँ चुनौती देबय लगैत अछि। गर्भसन्धिमे हिरोइनक प्रवेशसँ सांस्कृतिक विघटनक आ आर्थिक पलायनक समस्या उठैत अछि। विमर्शसन्धि ओहि दृश्यमे अभिव्यक्त होइत अछि जखन विद्यापतिक प्रतीकात्मक उपस्थितिमे सर्वहारा जनसमूह अपन मुक्तिक मार्ग खोजैत अछि। निर्वहणसन्धि - अर्थात् समाधान-बिन्दु - एहि नाटकमे सुस्पष्ट रूपेँ अनुपस्थित अछि, जे एकटा महत्त्वपूर्ण नाट्यशास्त्रीय न्यूनता थिकैक।

### (ख) रस-विचार

नाट्यशास्त्रमे आठ वा नव रसक संकल्पना प्रतिपादित अछि। गहन उग्रासमे करुण रस सर्वाधिक प्रभावी रूपेँ प्रवाहित होइत अछि - वृद्ध दम्पतीक विलापमे, महिलाक परदेश-गमन सम्बन्धी गीतमे, आ बुलन्तीक एकमात्र पुत्रविरह-वेदनामे। वीर रस द्वितीय भागक जनआन्दोलन-दृश्यमे उभरैत अछि। बीभत्स रस जिमदारक शोषणक वर्णनमे अनुभव होइत अछि। हास्य रस टुनमा-मुसनाक बालसुलभ व्यंग्यात्मक संवादमे प्रकट होइत अछि। किन्तु शृंगार रस - जे भरतमुनिक मतें रसरज थिकैक - एहि नाटकमे प्रायः अनुपस्थित अछि। भाष्यकार अभिनवगुप्तक रसध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिएँ नाटकक भाषा व्यंजनात्मक शक्तिसँ समृद्ध अछि, किन्तु साहित्यिक परिष्कारक अभावमे ध्वनि पूर्णतः विकसित नहि भऽ सकल अछि।

### (ग) नायक-प्रकार आ पात्र-वर्गीकरण

नाट्यशास्त्र धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित आ धीरप्रशान्त - चारि प्रकारक नायकक उल्लेख करैत अछि। गहन उग्रासमे कोनो एकटा केन्द्रीय नायक नहि अछि। विद्यापति प्रतीकात्मक रूपेँ धीरप्रशान्त नायकक भूमिकामे आबैत छथि - सांस्कृतिक चेतनाक आह्वाहक। जनसमूह नायक थिक, जे भारतीय

लोकनाट्य-परम्परासँ अधिक मेल खाइत अछि, बजाय शास्त्रीय संस्कृत नाट्यपरम्पराक। ई एकटा सचेत नाट्यशास्त्रीय चयन कहल जा सकैत अछि।

(घ) अंकसंख्या आ नाट्यविधान

नाट्यशास्त्रमे दशरूपकक वर्णन अछि - नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार आदि। गहन उगरास शास्त्रीय नाटकक लक्षणसँ भिन्न, प्रकरणक अधिक निकट अछि कियाक तँ एहिमे सामाजिक जीवनक यथार्थ चित्रण अछि, राजकीय कथानक नहि। किन्तु लोकनाट्यक परिप्रेक्ष्यमे ई नाटक विदापत नाच, जट-जटिन, आ सामा-चकेवाक सामूहिक गायन-परम्परासँ बेशी सम्पर्क राखैत अछि। जाहि प्रकारसँ महिला-पात्र लोक मुरेठा बान्हि एवं सांस्कृतिक गीत गबैत मंचपर आवैत छथि, ओ मिथिलाक लोकनाट्य-परम्पराक सजीव निरन्तरता थिकैक।

### ३. पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक दृष्टिऽ

पाश्चात्य आ चीनी नाट्य सिद्धान्तक संग तुलनात्मक मीमांसा

पाश्चात्य नाटककार बर्टोल्ट ब्रेख्तक 'महाकाव्यात्मक रंगमंच' (Epic Theatre) आ 'विमुखता प्रभाव' (Verfremdungseffekt/Alienation effect) दर्शक केँ कथानक सँ भावुकताक स्तर पर विलग राखि कऽ तार्किक विवेचनक अवसर दैत अछि। ब्रेख्तक ई सिद्धान्त पारम्परिक चीनी नाट्य शैली (विशेषतः मेई लानफांगक अभिनय) सँ प्रभावित रह्य। चीनी रंगमंचमे 'चतुर्थ देवाल' (Fourth Wall) केँ तोड़ि कऽ दर्शक सँ सोझ संवाद कयल जाइत अछि।

चीनी स्पोकन ड्रामा (Huaju) क प्रणेता हुआंग जुओलिन एहि पद्धति केँ 'शिऐयी' (Xieyi / Essentialist Theatre) रंगमंचक नाम सँ प्रस्तुत कयलनि, जाहिमे प्रवाहिता (Fluidity), लचीलापन (Flexibility), त्रिविमता (Sculpturality), आ संकेतात्मकता (Conventionality) मुख्य अछि।

'गहन उगरास'क नाट्य-शिल्प पूर्णतः 'शिऐयी' आ ब्रेख्तक सिद्धान्तक मैथिली रूपान्तरण अछि। डा. अभि सुवेदीक अनुसार, नाटकमे कोनो यथार्थवादी दृश्य-विधान (Scenography) केर स्थान पर पात्रक संवाद आ सम्बन्ध मंचक निर्माण

करैत अछि नाटकक दृश्य परिवर्तन अत्यन्त प्रवाहमयी आ लचीला अछि; दृश्य बिनु पर्दा खसने समकालीन समय सँ सोझे २४० वर्ष पूर्व सिमरौनगढ़क दमन आ ऐतिहासिक विस्थापनक दिश चलि जाइत अछि। चेला बकलेलबाक थरथराइत चलब आ जिमदारक लाठी लपेटि कऽ बैसब प्रतीकात्मक रूढ़िवादिता (Conventionality) केँ स्पष्ट करैत अछि।

यहूदी (Yiddish) नाट्य सिद्धान्तक संग तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य आ विस्थापन विमर्श

यहूदी यिडिश रंगमंच (Yiddish Theatre) क विकास पूर्वी यूरोपमे अशकेनाजी यहूदी लोकनिक यिडिश भाषामे भेल रहय। एकर मूल जड़ि 'पूरीम' पर्वक अवसर पर खेलल जायवला प्रहसन 'पूरीमशिपल्स' (Purimshpils) मे रहय, जाहिमे समकालीन सामाजिक विसंगति आ धनी वर्ग पर तीक्ष्ण प्रहार कयल जाइत रहय। मैथिलीक 'विवाह पंचमी झाँखी' आ मिनापक 'महामूर्ख सम्मेलन'क व्यंग्यात्मक नाटक पूरीमशिपल्सक यथार्थवादी आ हास्यात्मक शैलीक अत्यन्त निकट अछि।

यिडिश रंगमंचमे 'ब्रोडर सिंगर्स' (Broder Singers) घुमक्कड़ संगीतकार छलाह, जे वेशभूषा बदलि कऽ व्यंग्यात्मक आ हास्यास्पद प्रहसन प्रस्तुत करैत छलाह, जकरा सँ अब्राहम गोल्डफाडेन व्यावसायिक यिडिश रंगमंचक नीव रखलनि। 'गहन उगरास'क आरम्भिक दृश्यमे जिमदार फुलगेन सिंहक दुआरि पर धियापूताक प्रहसन आ द्वितीय भागमे अभेलबा बाबा आ बकलेलबा चेलाक प्रहसन ब्रोडर सिंगर्सक देसज आ हास्यात्मक नाट्य-पद्धति सँ मेल खाइत अछि।

यिडिश रंगमंचमे 'शुंड' (Shund / Popular trash theatre) बनाम 'साहित्यिक रंगमंच' (Literary Theatre) क जे संघर्ष रहय, तकर विश्लेषण करैत Itsik Manger लिखने छलाह जे शुंड रंगमंच वास्तवमे बिना कोनो एकेडेमीक अभिनय कयल जायवला 'मुक्त मंच' थिक, जाहिमे लोक-इच्छाक स्वतन्त्र प्रस्फुटन होइत रहय। मैथिली नाट्य आन्दोलनमे सेहो 'शुंड' (लोक नाच, कीर्तनिया) आ शिष्ट साहित्यिक रंगमंचक मध्य संघर्ष रहल अछि, जकरा 'गहन उगरास'मे लोक-संस्कृतिकेँ राजनैतिक मुक्ति सँ जोड़ि कऽ पाटि देल गेल अछि।

## विस्थापन, वैदेशिक रोजगारी आ स्मृति-दंश (Nostalgia)

यिडिश रंगमंचक सर्वाधिक पैघ आधार 'विस्थापन' (Diaspora), पलायन (Migration) आ स्मृति-दंश (Nostalgia) रह्य। पूर्वी यूरोप सँ पलायन कऽ अमेरिका पहुँचल गरीब यहूदी लोकनि अपन 'शेततल' (Shtetl - यहूदी ग्राम) क स्मृतिमे नाटक आ 'मेइन शेततल बेल्ज' जकाँ गीत गाबि कऽ अपन दुःख बिसरैत छलाह।

'गहन उगरास' आधुनिक मैथिल विस्थापनक एहि tragedy कें अत्यन्त प्रखरता सँ प्रस्तुत करैत अछि।<sup>1</sup> खाडी देश (कतार, सऊदी अरब) मे 'कफाला' (Kafala) प्रथाक दमनकारी चंगुलमे फँसल मैथिल प्रवासी (मुण्ढा) आ ओकर घर पर एकल जीवन जी रहल 'खाडी विधवा' (Hiroine) क मध्य पीसिओक संवाद यिडिश विस्थापन नाट्य-सिद्धान्तक मैथिली रूपान्तरण थिक। एतय एड्सक आशंका, कण्डमक प्रयोग आ चारित्रिक संशयक दंश प्रवासी जीवनक स्मृति-दंश (Nostalgia) आ विस्थापनक भयंकर यथार्थ कें स्पष्ट करैत अछि।

### (क) अरस्तूक अनुकरण-सिद्धान्त आ त्रय-एकता

अरस्तू अपन काव्यशास्त्रमे कहलनि जे त्रासदी उत्तम मनुष्यक अनुकरण थिकैक जे कातार्सिस - अर्थात् दर्शकक भावशुद्धि - उत्पन्न करैत अछि। गहन उगरासमे अरस्तूक त्रय-एकताक (समय, स्थान, कर्म) स्थूल अनुपालन नहि होइत अछि - नाटकक स्थान गाम, पी सी यो (पुलिस चौकी), मेला-मैदान, जुड़शीतल-घाट, इत्यादि बदलैत रहैत अछि आ समय-विस्तार बर्खक बर्ख धरि बुझाईत अछि। किन्तु एकक सर्वश्रेष्ठ अरस्तूवादी तत्त्व - कर्म-एकता - एहिमे आंशिक रूपेँ उपस्थित अछि, किएक तँ सभ घटना शोषण-मुक्तिक एकटा केन्द्रीय संघर्षक चारूकात घूमैत अछि।

अरस्तूक महान त्रासदी-सिद्धान्तक दृष्टिँ एहि नाटकमे पेरिपेटिया (भाग्य-परिवर्तन) जिम्दारक पतनमे देखल जा सकैत अछि - जे एकबेर सर्वशक्तिमान छल तेकरा अन्तमे बालकसभ 'कुत्ता हुलका दू, बिलाइ लुधका दू' कहैत खेहाड़ैत अछि। किन्तु अनागनोरिसिस (सत्य-साक्षात्कार) स्पष्टतया अनुपस्थित अछि, जे नाटककें पूर्ण क्लासिकल त्रासद संरचनासँ रोकैत अछि।

(ख) ब्रेख्त-प्रभावः दूरीकरण-नाट्य

गहन उगरास पर सर्वाधिक स्पष्ट प्रभाव जर्मन नाटककारक वैयक्तीकरण-विरोधी नाट्य-पद्धतिक देखाइत अछि। डा. अभि सुवेदीक भूमिका स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे ई नाटक 'प्रयोगशील' अछि आ 'मानुष' नै दृश्यविधान आ "सेनोग्राफी" का निर्माता हुन् र तिनले नै "गहन उगरास" को नाट्यकलेवर बनाएको छ।' ब्रेख्तक महाकाव्यात्मक नाट्य-परम्पराक अनुरूप एहिमे कथासूत्र बारम्बार टूटैत अछि, पात्र सभ जनगीत गबैत नाट्य-भ्रम (theatrical illusion) तोडैत छथि, आ दर्शककें भावनात्मक तादात्म्यक स्थानपर बौद्धिक प्रतिक्रिया दिअ लेल प्रेरित कयल जाइत अछि।

टुनमा-मुसनाक हास्यपूर्ण गीत - 'हाथी अगत, घोडा अगत, अइ बाबा बियाहमे पोता चलत' - एकटा स्पष्ट ब्रेख्तीय हस्तक्षेप थिकैक जे दर्शककें यथार्थक विदूषताकें सचेतनतासँ देखय लेल बाध्य करैत अछि।

(ग) स्तानिस्लावस्कीक मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद

स्तानिस्लावस्की जे पात्रक आन्तरिक जीवनक गहन खोजपर बल दैत छलाह, ओहि दृष्टिँ गहन उगरासमे पात्रक मनोवैज्ञानिक गहराई न्यून अछि। बुलन्तीक पुत्र-विछोहक पीडा, हिरोइनक दोहरा जीवनक अन्तर्द्वन्द्व - एहि ठाम किञ्चित् संवेदनशील नाट्य-क्षण उपस्थित अछि, किन्तु पात्रक व्यक्तित्व-निर्माण (characterisation) समग्रतामे अपूर्ण रहल अछि। एहि दृष्टिँ नाटककार सामाजिक उद्देश्यकें पात्रक व्यैक्तिक विकासक उपर प्राथमिकता देबऽ चाहलनि अछि।

(घ) अस्तित्ववादी नाट्यधारा

काम्यू आ सार्त्रक अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ नाटकक आभ्यन्तरिक शोक - लोक जीवैत अछि मुदा व्यवस्था ओकर जीवनक अर्थ छीनि लैत अछि - एकटा अनुगूँज सुनाइत अछि। बुलन्तीक एकटा उद्गार एहि जखन ओ कहैत छथि जे पुत्र घरसँ पडायल, मुह नहि देखल - एहिमे एकटा असम्बद्ध, नियतिहीन जीवनक अस्तित्ववादी पीडा ध्वनित होइत अछि।

#### ४. इजरायली नाट्य-चिन्तनक परिप्रेक्ष्यमे

इजरायली नाटककार हनोक लेविन (१९४३-१९९९) जे आधुनिक इजरायली रंगमंचक केन्द्रीय स्तम्भ छलाह, ओ राजनैतिक व्यंग्य आ जनसामान्यक यन्त्रणाकेँ नाट्य-रूप देबामे सिद्धहस्त छलाह। गहन उगरासक जिमदार-विरोधी व्यंग्यात्मक संवाद, बालपात्रक मुखसँ सत्ताक उपहास, आ सामूहिक विरोध-गीत - एहि सभमे लेविनेस्क कटुता आ प्रत्यक्षतासँ साम्य देखल जा सकैत अछि। इजरायली रंगमंचमे जाहि प्रकारँ साधारण नागरिकक आर्त-स्वर नाट्य-मंचक भाषा बनैत अछि, कापडि ओही परम्पराक समानान्तर कार्य मिथिलाक माटि-पानिसँ कयल अछि। किन्तु इजरायली नाट्य-परम्परामे जे दर्शनात्मक घनत्व देखाइत अछि, ओहि गहराईकेँ गहन उगरास सम्पूर्णतया प्राप्त नहि कऽ सकल अछि।

#### ५. चीनी नाट्य-परम्पराक दृष्टिऽ

चीनी नाट्यपरम्पराक - विशेषतः युआन ओपेराक आ माओ-युग-परवर्ती राजनैतिक रंगमंचक - केन्द्रीय विशेषता थिकैक गीत, नृत्य, आ संवादक एकराकरण, जाहिमे सामूहिक चेतनाक स्वर मुखरित होइत अछि। गहन उगरासमे लोकगीतक बारम्बार प्रवेश - जुडशीतलक गीत, होरीक गीत, पगरी-गीत, दहेज-विरोधी स्वर - एहि अर्थमे चीनी नाट्य-शैलीसँ कार्यात्मक साम्य राखैत अछि। विद्यापतिक पात्रक रूपेँ मिथिलाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक प्रतीककेँ मंचपर प्रस्तुत करब चीनी नाट्य-परम्पराक ओहि प्रवृत्तिक स्मरण दिअबैत अछि जाहिमे ऐतिहासिक-मिथकीय पात्र समकालीन राजनैतिक सन्देशक वाहक बनैत अछि।

#### ६. नाटकक प्रमुख विशेषतासभ

प्रथम - राजनैतिक स्पष्टवादिता: नाटक नेपालक राजशाही, माओवादी जनयुद्ध, दोसर जनआन्दोलन, प्रतिगमनी ज्ञानेन्द्र शासन, संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक स्थापना - एहि सभ ऐतिहासिक घटनाकेँ सोझे मंचपर आनैत अछि, ओ एकटा स्पष्ट राजनैतिक साक्ष्य थिकैक। आब मिथिलाक भारतीय भाग एहि

इतिहाससँ बाहर भऽ एकर नाट्य-प्रस्तुति देखैत अछि- ई एकटा विशेष भू-सांस्कृतिक स्थितिमे नाट्य-साहित्यक निर्माण थिकैक।

द्वितीय - भाषिक स्तरीकरण: जिमदारक भाषा आ मजदूरसभक भाषामे स्पष्ट अन्तर अछि। स्त्री-पात्रक भाषा आ पुरुष-पात्रक भाषामे सेहो स्वर-भेद देखाइत अछि। विद्यापतिक संवाद साहित्यिक-उद्बोधक स्वरमे अछि। फोनबलाक माध्यमे आधुनिक संचार-संस्कृतिपर व्यंग्य कयल गेल अछि। ई बहुस्तरीय भाषिक संरचना एकटा प्रौढ नाट्यशिल्पकारक पहचान दैत अछि।

तृतीय - स्त्री-स्वरक महत्त्व: नाटकमे छौड़ी-१ आ छौड़ी-२ जिमदारकें खुलेआम गाली दैत खेहाड़ैत छथि - 'ऐ बाबाके ताबामे नेर गुरका दू, कुत्ता हुलका दू, बिलाइ लुधका दू।' बुलन्ती आ सुभद्रा सेहो प्रतिरोधक स्वर उठबैत छथि। महिला-पात्रक एहि सशक्त उपस्थितिसँ नाटक मिथिलाक पितृसत्तात्मक सामाजिक ढाँचाकें नाट्य-भाषामे चुनौती दैत अछि।

चतुर्थ - सांस्कृतिक-अनुष्ठानिक तत्त्वक समावेश: जुड़शीतलक जल-छिटाइ, होरी-उत्सव, लोकगीत, पगरी-बन्धन - एहि सभ लोकानुष्ठानिक तत्त्वकें नाट्य-कथानकमे सहजतापूर्वक बुनल गेल अछि। ई गहन उग्रासकें केवल राजनैतिक नाटकसँ उठा साँस्कृतिक स्मृतिक दस्तावेज बनाबैत अछि।

पञ्चम - दहेज-प्रथाक आलोचना: नाटकक एकटा महत्त्वपूर्ण अंशमे लखना, जनका, बेचना - तीनू मिलि दहेज-प्रथाकें व्यंग्यात्मक रूपेँ उठबैत छथि। 'बूझ जे रजा जनके पालीस', अपना सब ओत', दहेज-परथा शुरू भेल हौ' - एहि संवादमे राजा जनकक सांस्कृतिक प्रतापकें सामाजिक कुरीतिसँ जोड़बाक एकटा व्यंग्यात्मक दृष्टि देखाइत अछि।

## ७. नाटकक प्रमुख सीमासभ

प्रथम - कथानकक शिथिलता: नाटकमे घटना-प्रवाहक कोनो कसल संरचना नहि अछि। एक दृश्यसँ दोसर दृश्यक सम्बन्ध प्रायः संयोगात्मक अछि, कार्य-कारण-सम्बन्ध नहि। भरतमुनिक सुत्रधार-परम्परा वा ब्रेख्तक स्पष्ट दृश्य-विभाजन - किछुओ नहि अछि। दर्शक वा पाठककें कथाक सूत्र स्वयं जोड़य पड़ैत छनि।

द्वितीय - पात्रक अपूर्ण विकास: विद्यापतिक प्रतीकात्मक उपस्थिति महत्त्वाकांक्षी अवश्य अछि, किन्तु ओकर नाट्यात्मक सम्भावना पूर्णतः उपयोग नहि भेल अछि। हिरोइनक पात्र सांस्कृतिक विकृतिक प्रतीक बनाओल गेल अछि, किन्तु एकर सामाजिक-आर्थिक मूल-कारणक गहन अन्वेषण अनुपस्थित अछि। जिम्दारक पात्र एकायामी शोषक थिक, ओहिमे मानवीय जटिलताक अभाव अछि।

तृतीय - अन्तकै लऽ कऽ अस्पष्टता: नाटकक अन्तिम दृश्यमे जुलूस, नारा, आन्दोलन - सब किछु एकत्रित अछि, किन्तु कोनो स्पष्ट नाट्य-परिणति नहि अछि। 'समाज-संस्कृतिपर लागल गहनके, उग्रास कर' - एहि संवादसँ नाटकक शीर्षककै सार्थक कयल गेल अछि, किन्तु ई काव्यात्मक समापन नाट्यात्मक समापन नहि थिकैक। भारतीय नाट्यशास्त्रमे आवश्यक निर्वहण-सन्धि आ पाश्चात्य नाट्यशास्त्रमे आवश्यक परिणाम (denouement) - दुनूक अभाव एकटा रचनात्मक सीमा थिकैक।

चारिम - मंचनक जटिलता: नाटकमे अनेक स्थान, बहुसंख्यक पात्र, लोकसंगीत-प्रस्तुति, दूर-दूरसँ आवैत जनआन्दोलनक ध्वनि - एहि सबक मिथिलाक सीमित साधन-सम्पन्न रंगमंचपर मंचन करब अत्यन्त कठिन अछि, मुदा असम्भव नहि अछि।

डा. अभि सुवेदी भूमिकामे लिखैत छथि जे 'नाटक निर्देशकक कसबट्टी पर सए प्रतिशत सही उतरत, दर्शकक कसबट्टी पर त सहजिहिं' - नाटकक मंचनीयता एकर सीमा नहि थिकैक।

#### ८. नाटकक ऐतिहासिक महत्त्व

नेपालीय मिथिलाक मैथिली नाट्यसाहित्यक सन्दर्भमे गहन उग्रास एकटा महत्त्वपूर्ण कृति थिकैक। जनकपुरमे मिथिला नाट्यकला परिषद (१९७९) केर स्थापनाक परवर्ती नाट्य-परम्पराक एकटा विशिष्ट प्रतिनिधि-कृतिक रूपमे एकरा देखल जा सकैत अछि।

## १. समेकित नाट्यशास्त्रीय तुलासँ निष्कर्ष

गहन उगारास एकटा राजनैतिक-सामाजिक उद्देश्यसँ प्रेरित, लोकनाट्य-परम्पराकेँ आधुनिक राजनैतिक नाट्यसँ जोड़बाक महत्वाकांक्षी प्रयास थिकैक। भारतीय नाट्यशास्त्रक रस-सिद्धान्तमे करुण रसक सफल प्रवाह, लोकनाट्य-परम्पराक सजीव उपयोग, आ सामूहिक नायकत्वक संकल्पना - एहि तत्त्वसभमे ई नाटक उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करैत अछि। ब्रेख्तीय दूरीकरण-पद्धतिक आंशिक उपयोग आ राजनैतिक स्पष्टवादिता एकर आधुनिकताक प्रमाण अछि। किन्तु कथानकक संरचनात्मक शिथिलता, पात्रक मनोवैज्ञानिक गहराईक अभाव, निर्वहण-सन्धिक अनुपस्थिति, आ मंचनक व्यावहारिक जटिलता - एहि सीमासभसँ नाटककेँ मुक्त नहि कहल जा सकैत अछि। तथापि मैथिली नाट्यसाहित्यक सन्दर्भमे परमेश्वर कापडिक एहि कृतिक ऐतिहासिक महत्त्व आ सांस्कृतिक योगदान निर्विवाद अछि।

## ग्रन्थ-सूची

मूल साहित्यिक कृति, भारतीय काव्यशास्त्र, तर्कदर्शन, लोककथा तथा नाट्य-अध्ययनसँ सम्बद्ध पुस्तक-प्रकाशनक विवरण नीचे देल गेल अछि।

### मूल कृति

कापडि, परमेश्वर। गहन उगरास। प्रथम संस्करण, फागुन २०७३ वि.सं.

जनकपुरधाम : पृथु प्रकाशन।

### भारतीय काव्यशास्त्र आ दर्शन

आनन्दवर्धन। The Dhvanyāloka of Ānandavardhana with the Locana of Abhinavagupta. अनुवाद : Daniel H. H. Ingalls, Jeffrey Moussaieff Masson आ M. V. Patwardhan; सम्पादन : D. H. H. Ingalls। Harvard Oriental Series, खण्ड 49। Cambridge, MA : Harvard University Press, 1990।

कुन्तक। The Vakrokti-Jivita of Kuntaka. आलोचनात्मक सम्पादन एवं अंग्रेजी अनुवाद : K. Krishnamoorthy। प्रथम संस्करण। धारवाड़ : Karnatak University, 1977।

भरतमुनि। The Nāṭyaśāstra: A Treatise on Hindu Dramaturgy and Histrionics. अंग्रेजी अनुवाद : Manomohan Ghosh। खण्ड १-२। कलकत्ता : Royal Asiatic Society of Bengal / Asiatic Society, 1950-1961।

Kane, P. V. History of Sanskrit Poetics. चतुर्थ संस्करणक पुनर्मुद्रण। दिल्ली : Motilal Banarsidass, 1971।

Matilal, Bimal Krishna. The Navya-nyāya Doctrine of Negation: The Semantics and Ontology of Negative Statements in Navya-nyāya Philosophy. Harvard Oriental Series, खण्ड 46। Cambridge, MA : Harvard University Press, 1968।

Radhakrishnan, Sarvepalli; Moore, Charles A. (सम्पा.). A Source Book in Indian Philosophy. Princeton, NJ : Princeton University Press, 1957।

## लोककथा आ आख्यान-अध्ययन

Propp, Vladimir. Morphology of the Folktale. दोसर संस्करण; अनुवाद :

Laurence Scott; सम्पादन : Louis A. Wagner | Austin : University of Texas Press, 1968 |

Ramanujan, A. K. (सम्पा. आ अनु.). Folktales from India: A Selection of Oral Tales from Twenty-two Languages. New York : Pantheon Books, 1991 |

Shulman, David Dean. The King and the Clown in South Indian Myth and Poetry. Princeton, NJ : Princeton University Press, 1985 |

## नाटक आ रंगमञ्च

Aristotle. Poetics. अनुवाद : Stephen Halliwell; Loeb Classical Library 199, सङ्गे On the Sublime आ On Style | Cambridge, MA : Harvard University Press, 1995 |

Bharucha, Rustom. Theatre and the World: Performance and the Politics of Culture. प्रथम संस्करण | London : Routledge, 1993 |

Brecht, Bertolt. Brecht on Theatre: The Development of an Aesthetic. सम्पादन एवं अनुवाद : John Willett | New York : Hill and Wang, 1964 |

Richmond, Farley P.; Swann, Darius L.; Zarrilli, Phillip B. (सम्पा.). Indian Theatre: Traditions of Performance. Honolulu : University of Hawaii Press, 1990 |

Schechner, Richard. Between Theater and Anthropology. Philadelphia : University of Pennsylvania Press, 1985 |

Stanislavski, Konstantin. An Actor Prepares. अंग्रेजी अनुवाद : Elizabeth Reynolds Hapgood | New York : Theatre Arts, 1936 |

रेड-रेड सहित एहि ग्रन्थमे विवेचित अन्य रचनाक पृथक् मुद्रित संस्करण, प्रकाशक आ प्रकाशन-वर्षक पुष्ट विवरण उपलब्ध नहि रहलाक कारणे ओहि विवरणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

# नित नवल परमेश्वर कापड़ि

कथा, कविता, समालोचना आ रंगमञ्चक पाँच खण्डमे परमेश्वर कापड़िक रचना-संसारक आलोचनात्मक अध्ययन — गजेन्द्र ठाकुरक लेखन, विदेहक सम्पादनमे।



०१ कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा

०२ पद्य, अनुवाद आ काव्यालोचना

०३ रचना-संसारक विविध आयाम

०४ रेड-रेड : नाट्यकृति आ रंग-विमर्श

०५ गहन उग्रास : नाट्यशास्त्रीय मीमांसा



विदेह वेबसाइट

<https://www.videha.co.in/>



विदेह ई-जर्नल (GitHub)

<https://videha-ejournal.github.io/videha/>

विदेह • प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • ISSN 2229-547X

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६ • सर्वाधिकार सुरक्षित